अंक 1, प्रवेशांक (जुलाई 2020)

शब्द सारथी

साहित्य पत्रिका

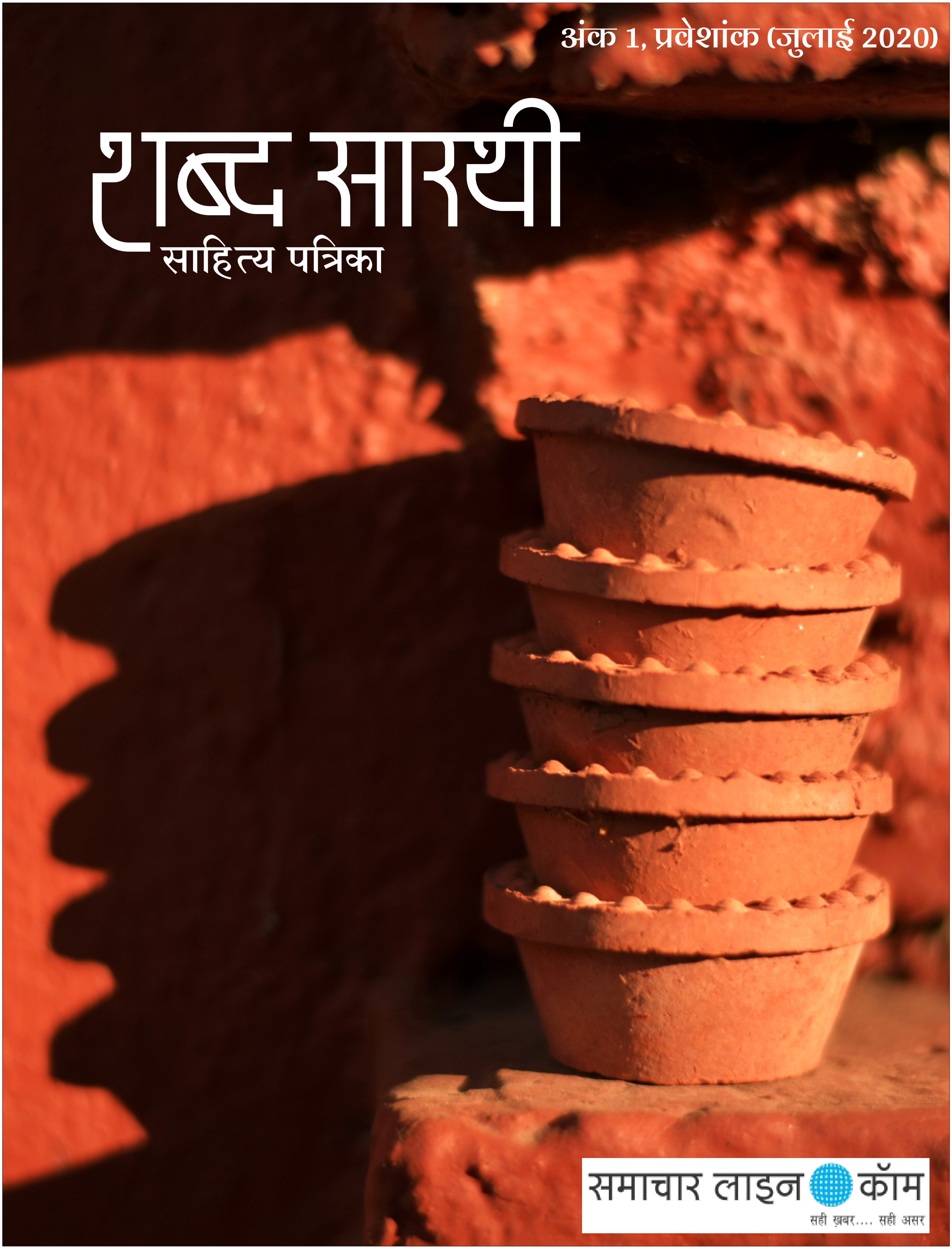

समाचार लाइन कॉम
सही ख़बर.... सही असर

समाचार लाइन.कॉम
सही ख़बर.... सही असर

शब्द सारथी

<u>टीम समाचार लाइन</u>

प्रकाश त्रिवेदी
संस्थापक, एडिटर इन चीफ

आदित्य त्रिवेदी
चेयरमैन, प्रबंध निदेशक

नितिन शर्मा
निदेशक (तकनीकी)

<u>टीम शब्द सारथी</u>

मृदुल कुमार ओझा
प्रधान संपादक

विश्व प्रताप सिंह
साहित्य संपादक

आकल्पन
अक्षय अमेरिया

कला संपादन
विनीता खत्री

संकट के इस मौन समय में पत्रिका २० सन्नाटे को तोडते हुए कोरोना के बाद के भारत के लिये रचनात्मक और सार्थक भूमिका निभा सके और इस महान सभ्यता में व्याप्त वैचारिक-अंधत्व को प्रकाश से आलोकित करने का रास्ता दिखाने में सफ्फल हो सके यही मेरी शुभकामनाएँ हैं.

गोपाल शर्मा
उपाध्यक्ष
मध्य प्रदेश सामाजिक विज्ञान शोध संस्थान

तप्त रेगिस्तान में विचरता मृग झुंड बादलों को घिरते देख जैसे आशान्वित और आश्वस्त हो उठता है कि अब कोई सुरसरि न सही पर सुरधारों से धरा का सिंचन हो सकेगा कुछ समयांतराल के बाद दूर्वा के हरित तृण यत्र तत्र अपनी जीवंतता के साथ शोभनीय होंगे कुछ ऐसी ही आशा आपके इस महनीय प्रयास को देख बंध गई है मुझे . आज के समय में जब पूरी पीढय़िां की पीढय़िां साहित्य से, सरोकार से, किताबों के पन्नों की सरसराहट, हर माह को आने वाली पत्रिकाओं की तिथी के इंतजार से यंत्रवत विलग हो चुकी है जहां किसी साहित्य के मील के पत्थर का नाम बोलने पर पहले समझाना पढ़ता है कि वे कौन हैं जहां हर घर में छिपी रतनात्मकता को उसी घर के रहवासी नहीं जान पाते जहां आधुनिकता व अनुकरण की प्रकृिया अपनी पराकाष्ठा पर हैं वहां इन नौजवानों की तिकटी का यह साहसिक कदम न केवल श्लाघनीय है वरन् मुक्त कण्ठ से प्रशंसा योग्य भी है 'शब्द सारथी' के सारथी बन ये युवान हम सब पृथा पुत्रों को साहित्य के समरांगण में विचारों के शरों को तर्कों के गाण्डीव से संधानित करवाने को प्रस्तुत हैं . मेरी आकाश भर शुभकामनाऐं और सागर भर शुभेच्छाऐं. अपने साध्य में निश्चित ही सफ्फल हो. आश्वस्त करने वाला तथ्य यह कि विधि के विशेषज्ञ होने पर भी ये न केवल स्वयं की रुची को कायम रख पाए बल्कि हम सब की भी रुची तदोन्मुख कर रहे हैं . परिश्रम परिणाम देगा !
जब कोई अंधेरे से लड़ने का प्रण कर लेता है अकेला जुगनू ही सारा तमस हर लेता है

'बालश्री' आद्या दीक्षित

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि राष्ट्र में साहित्यिक चेतना का उदय करने और हिंदी की खोई हुई अस्मिता को उसकी पहचान दिलाने हेतु राष्ट्रीय विधि विश्वविघालय के तुम तीन छात्रों द्वारा शब्द सारथी साहित्यिक पत्रिका की संकल्पना की गई है।सुसाहित्य जीवन में एक अच्छे मित्र, एक अच्छे गुरू या मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है। हिंदी साहित्य ने तो सदैव ही राष्ट्र एवं समाज के पुनर्जागरण का पुनीत कार्य किया है।मुझे विश्वास है कि तुम्हारा यह शब्द सारथी साहित्य का ज्ञान रथ लिए जन-जन तक पहुंचेगा। पत्रिका के तीन भाग सभी पाठकों की साहित्यिक क्षुधा पूर्ति में सहायक होंगे।हिंदी पत्रिका शब्द सारथी के उद्देश्यपूर्ण प्रकाशन हेतु तुम एवं समाचार लाइन मीडिया ग्रुप बधाई के पात्र हो।शब्द सारथी सफलता के सोपान पर अग्रसर हो, बाबा महाकाल से यही कामना करती हूं।
हार्दिक शुभकामनाएं!

-श्रीमती रंजना व्यास

सेंट पॉल कान्वेंट सीनियर सेकंडरी स्कूल, उज्जैन (म.प्र.)

समाचार लाइन की ओर से सन्देश...

साहित्य,संस्कृति और शब्द संस्कार के प्रति अपने सम्यक दायित्वों का निर्वहन करते हुए समाचार लाइन मीडिया समूह को संतोष और आनन्द की अनुभूति हो रही है। "शब्द-सारथी" के रूप हम हिंदी साहित्य के भूत-वर्तमान और कल की शब्द यात्रा शुरू कर रहे है। हम अपने पाठकों को साहित्य के नवरस में भिगोना चाहते है।समयकाल की कठनाईयों के बीच "शब्द सारथी" का नीरव कोलाहल लोकजीवन के मानस को अपूर्व शांति और सकारात्मकता प्रदान करेगा। इसी आशा से आपको शब्द सारथी समर्पित है।

आपका ही।

प्रकाश त्रिवेदी
संस्थापक,
एडिटर इन चीफ
समाचार लाइन मीडिया समूह

यह पत्रिका युवाओं में हिंदी साहित्य के प्रति प्रेम एवं साहित्यकारों का अलख जगाने में सिद्ध साबित होगी। मेरा यह मानना है कि हम अपनी मातृभाषा के उत्थान के लिए जितना प्रयास करें, उतना कम है। हिंदी के ऋण को चुकाने में हमारा यह योगदान आप सभी पाठकों को समर्पित है।

आदित्य त्रिवेदी
चेयरमैन,
प्रबंध निदेशक
समाचार लाइन मीडिया समूह

एक प्रयास है हिंदी साहित्य को सभी के बीच पहले की ही तरह लोकप्रिय बनाने का। हिंदी साहित्य के महान लेखकों, कवियों की रचनाएं एवं नए युग के नए कवि एवं लेखकों का अनूठा संगम है। मेरी स्वयं हिंदी साहित्य में रुचि तो बचपन से ही रही थी, पर कभी उसको और अधिक जानने का प्रयास नहीं कर सका। किन्तु जब थोड़ा जानने की ओर बढ़ा तो देखा हिंदी साहित्य तो एक अथाह सागर है जिसमें बार बार डूब जाने को जी चाहता है, कितना भी इसका रसपान किया जाए, प्यास नहीं बुझ सकती। इसी सागर से कुछ बहुमूल्य रत्नों को इस पत्रिका में संजोने का प्रयास किया गया है। अगर यह पत्रिका किसी एक व्यक्ति की भी हिंदी साहित्य में रुचि जागृत कर पाती है तो ये हमें नई ऊर्जा प्रदान करेगा और अधिक मेहनत से हिंदी भाषा की सेवा करने के लिए।

धन्यवाद,
विश्व प्रताप सिंह

> हम सभी छात्र हिंदी साहित्य से प्रेम के कारणवश इस कार्य को संकल्प के रूप में लेना चाहते हैं ताकि इस पत्रिका के माध्यम से एक नव पुनर्जागरण का आरंभ किया जा सके। जैसा कि आप सब को विदित होगा 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने हिंदी कविता को नया स्वर्णिम युग दिया और खड़ी बोली को काव्यगत प्राथमिकता में सम्मलित किया।

संकल्पना

हृदय के उद्गार को जब पृष्ठ पर अंकित किया जाता है तो हृदय को एक प्रेरणा सामने वाले को एक उद्देश्य और हर पाठक को आज और कल की एक संभावना मिलती है। लंबे समय तक बहुत कुछ सोचने पर धीरे-धीरे यह संभावना प्रगाढ़ हुई कि साहित्य की वर्तमान माध्यमों और पुराने माध्यमों दोनों के समन्वय से सुधीजनों तक पहुँचाया जाए तो बहुत बेहतर होगा। अपने जीवन के कुछ एक पढ़े हुए साहित्यिक परिमार्जन से यह कहना निराधार न होगा कि आने वाले समय को साहित्य की उतनी ही आवश्यकता है जितनी हमेशा से रही है। यद्यपी हमने यथासंभव प्रयास किया है कि पाठक के समक्ष त्रुटिविहीन प्रस्तुतिकरण किया जा सके तथापि मानव गलती का एक पुतला है और इस बात से जरा भी मुँह नहीं मोड़ा जा सकता कि बहुत सारी त्रुटियां शेष रह गयी हों उन सभी त्रुटियों के लिए हम क्षमा प्राथी रहेंगे। हम विश्वस्त हैं कि साहित्य को समाज का वह वर्ग हर पल पसंद करता रहेगा जिसको अतीत से सीखना है, वर्तमान में जागना है, भविष्य को संवृद्धि के मार्ग पर अग्रसर करना है।

साहित्य दिनकर जी की ललकार है जो वह संसद में उनके स्वयं की पाटी की ओर से प्रधानमंत्री पंडित जी को करते है, साहित्य विवेचना है जो आचार्य रामचंद्र शुक्ल की परिकल्पना से प्रगाढ़ हुई, साहित्य निराला जी भाषा है राम की शक्ति पूजा है, साहित्य भारतेन्दु जी का हिंदी प्रेम है, सरस्वती पत्रिका है जिसके माध्यम से लेखकों, कवियों के साथ जनमानस में एक नवीन आंदोलन खड़ा हुआ, ये परसाई जी द्वारा लिखे गए व्यंग निंदा रस की मधुरता है, रामचरित मानस की नवीनता है, कबीर दास जी की साखी है, रहीम जी का जीवंत दोहा, केशवदास जी का साहित्यिक ज्ञान, माँ मीरा का अनंत प्रेम है। साहित्य दुष्यंत कुमार जी की पुनजीवित करने की चेतना है, चंदबरदाई का रासो काव्य और वर्तमान में कुमार विश्वास, हरिओम पवार की मंच प्रस्तुति भी उसी का एक हिस्सा है।

इस साहित्यिक पत्रिका के माध्यम से हम राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय के हिंदी साहित्य प्रेमी तीन छात्र बतौर सम्पादक कार्यरत होंगे। हम सभी छात्र हिंदी साहित्य से प्रेम के कारणवश इस कार्य को संकल्प के रूप में लेना चाहते हैं ताकि इस पत्रिका के माध्यम से एक नव पुनर्जागरण का आरंभ किया जा सके। जैसा कि आप सब को विदित होगा 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने हिंदी कविता को नया स्वर्णिम युग दिया और खड़ी बोली को काव्यगत प्राथमिकता में सम्मलित किया। हम सब यह चाहते हैं कि अपने समय का सदुपयोग इस कार्य के लिए करें और इस राष्ट्र में साहित्यिक चेतना का थोड़ा उदय कर सकें।

हम इस पत्रिका के तीन भाग रखेंगे। प्रथम भाग पूर्णतया पुराने कवियों, कहानीकारों, उपन्यासों की चरणधूलि प्राप्त करने को समर्पित रहेगा। दूसरा भाग नए युवा कवियों, लेखकों को स्थान देने की कोशिश करेगा और अंत में सामरिक विषयों, जन चेतना पर लिखे गए लेख होंगे।

'समाचार लाइन' मीडिया ग्रुप हमे इसमें सहयोग करेंगे । सर्वप्रथम साहित्य की प्रेरणा बनने के लिए उनका बहुत बहुत आभार एवं साधुवाद देते हैं। हम अपनी पत्रिका उन्हीं के माध्यम से प्रकाशित करेंगे।

मैं इस पत्रिका के लिए उन सभी को धन्यवाद देना चाहूंगा जिन्होंने निरंतर मुझे इस मार्ग पर सहयोग किया है। आप सभी साहित्य प्रेमियों के प्रेम, स्नेह, दुलार की इस पथ पर नित्य आकांक्षा रहेगी।

इस पत्रिका में संपादक मंडल हर महीने पुस्तकों की समीक्षा प्रस्तुत करेगा और आने वाले समय मे लोगों को उस साहित्य की ओर लौटने को प्रेरित करेगा।

आशा है आप सब से सहयोग की जिसके माध्यम से हम अपने पुनीत संकल्प को निर्वाध रूप से पूरा करें।

सधन्यवाद।
प्रधान संपादक
मृदुल कुमार ओझा
शब्द सारथी

समर्पण

समर्पण

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन
'अज्ञेय'

'जिसको सब कुछ मिल गया उसको न कुछ ज्ञेय
बिना मिले सब स्वयं से कह गए कवि अज्ञेय'

अज्ञेय जी जिनको ये नाम मिला उपन्यास सम्राट कहे जाने वाले हिंदी साहित्य के पुरोधा मुंशी प्रेमचंद से जो कि उस समय 'हंस' पत्रिका के संपादक भी थे।सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' (७ मार्च, १९११ - ४ अप्रैल, १९८७) को कवि, शैलीकार, कथा-साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण मोड़ देने वाले कथाकार, ललित-निबन्धकार, सम्पादक और अध्यापक के रूप में जाना जाता है। इनका जन्म ७ मार्च १९११ को उत्तर प्रदेश के कसया, पुरातत्व-खुदाई शिविर में हुआ।बचपन लखनऊ, कश्मीर, बिहार और मद्रास में बीता। बी.एससी. करके अंग्रेजी में एम.ए. करते समय क्रांतिकारी आन्दोलन से जुड़कर बम बनाते हुए पकड़े गये और वहाँ से फ़रार भी हो गए। सन्१९३० ई. के अन्त में पकड़ लिये गये। अज्ञेय प्रयोगवाद एवं नई कविता को साहित्य जगत में प्रतिष्ठित करने वाले कवि हैं। अनेक जापानी हाइकु कविताओं को अज्ञेय ने अनूदित किया। बहुआयामी व्यक्तित्व के एकान्तमुखी प्रखर कवि होने के साथ-साथ वे एक अच्छे फ़ोटोग्राफ़र और सत्यान्वेषी पर्यटक भी थे।

शेखर एक जीवनी के इस रचनाकार को आधुनिक हिन्दी कविता के जनक के रूप में जाना जाता है जिसका प्रारम्भ तारसप्तक के प्रकाशन के साथ माना जाता है। १९३० से १९३६ तक विभिन्न जेलों में कटे। १९३६-३७ में सैनिक और विशाल भारत नामक पत्रिकाओं का संपादन किया। १९४३ से १९४६ तक ब्रिटिश सेना में रहे ; इसके बाद इलाहाबाद से प्रतीक नामक पत्रिका निकाली और ऑल इंडिया रेडियो की नौकरी स्वीकार की। देश-विदेश की यात्राएं कीं। जिसमें उन्होंने कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय से लेकर जोधपुर विश्वविद्यालय तक में अध्यापन का काम किया। दिल्ली लौटे और दिनमान साप्ताहिक, नवभारत टाइम्स, अंग्रेजी पत्र वाक् और एवरीमैंस जैसी प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया। १९८० में उन्होंने वत्सलनिधि नामक एक न्यास की स्थापना की जिसका उद्देश्य साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में कार्य करना था। दिल्ली में ही ४ अप्रैल १९८७ को उनकी मृत्यु हुई। १९६४ में आँगन के पार द्वार पर उन्हें साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ और १९७८ में कितनी नावों में कितनी बार पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार। उनका लगभग समग्र काव्य सदानीरा (दो खंड) नाम से संकलित हुआ है तथा अन्यान्य विषयों पर लिखे गए सारे निबंध सर्जना और सन्दर्भ तथा केंद्र और परिधि नामक ग्रंथो में संकलित हुए हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के संपादन के साथ-साथ अज्ञेय ने तारसप्तक, दूसरा सप्तक और तीसरा सप्तक जैसे युगांतरकारी काव्य संकलनों का भी संपादन किया तथा पुष्करिणी और रूपांबरा जैसे काव्य-संकलनों का भी। वे वत्सलनिधि से प्रकाशित आधा दर्जन निबंध- संग्रहों के भी संपादक हैं। प्रख्यात साहित्यकार अज्ञेय ने यद्यपि कहानियां कम ही लिखीं और एक समय के बाद कहानी लिखना बिलकुल बंद कर दिया, परंतु हिन्दी कहानी को आधुनिकता की दिशा में एक नया और स्थायी मोड़ देने का श्रेय भी उन्हीं को प्राप्त है। निस्संदेह वे आधुनिक साहित्य के एक शलाका-पुरूष थे जिसने हिंदी साहित्य में भारतेंदु के बाद एक दूसरे आधुनिक युग का प्रवर्तन किया।

शिशर ने पहन लिया वसन्त का दुकूल
गंध बह उड़ रहा पराग धूल झूले
काँटे का किरीट धारे बने देवदूत
पीत वसन दमक रहे तिरस्कृत बबूल
अरे! ऋतुराज आ गया!!

> उसको ये आकांक्षा नहीं कि उसका जीवन पथ अनुकूलता से भरा हो और वो व्यक्ति ही क्या जो सदैव अनुकूल पथानुगामी हो। जब तक कठिनता के कंटक हर एक क्षण पांवों को छाले देने और उन छालों ले रक्त रूपी जीवन उन्माद निकालने के लिए आतुर न हों तब तक चलने का आनंद ही क्या?

प्रयत्न है ऐसी उम्मीदों को जीवन करने की नये कवियों को लेखकों को पाठकों को उस दुनिया मे ले जाने की जहाँ पर जन्मती है ये पंक्तियाँ और जो लिखता है -

मैं कब कहता हूँ जग मेरी दुर्धर गति के अनुकूल बने,
मैं कब कहता हूँ जीवन-मरूनंदन-कानन का फफ़ूल बने?
काँटा कठोर है, तीखा है, उसमें उसकी मर्यादा है,
मैं कब कहता हूँ वह घटकर प्रांतर का ओछा फूल बने?

मैं कब कहता हूँ मुझे युद्ध में कहीं न तीखी चोट मिले?
मैं कब कहता हूँ प्यार करूँतो मुझे प्राप्ति की ओट मिले?
मैं कब कहता हूँ विजय करूँमेरा ऊँचा प्रासाद बने?
या पात्र जगत की श्रद्धा की मेरी धुंधली-सी याद बने?

पथ मेरा रहे प्रशस्त सदा क्यों विकल करे यह चाह मुझे?
नेतृत्व न मेरा छिन जावे क्यों इसकी हो परवाह मुझे?
मैं प्रस्तुत हूँ चाहे मेरी मिट्टी जनपद की धूल बने-
फिर उस धूली का कण-कण भी मेरा गति-रोधक शूल बने!

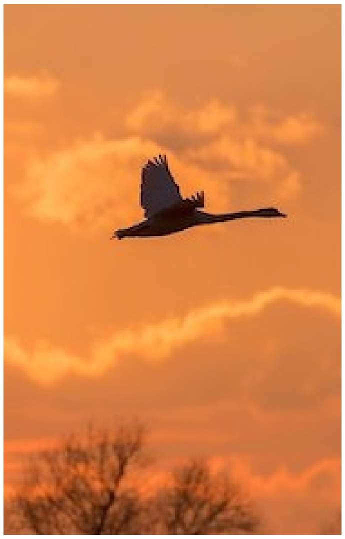

वो अपनी एक काव्यकृति 'सत्य तो बहुत मिलेंगे' में लिखते हैं कि
तुम-
तुम्हें तो
भस्म हो
मैंने फिर अपनी भभूत में पाया
अंग रमाया
तभी तो पाया ।

खोज में जब निकल ही आया,
सत्य तो बहुत मिले-
एक ही पाया ।

शेखर एक जीवनी नाम के उपन्यास से जीवन की परतें खोलीं तो 'असाध्य वीणा' में नव उन्माद भरा।

हम सब आइए इस पत्रिका 'शब्द-सारथी' के माध्यम से शुरु करते हैं यह नई यात्रा नवचेतना की यात्रा जिसमें हम इन महान हिंदी पुत्रों के आशीर्वचनों से आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे। अंत में ये कुछ एक पंक्तियाँ है जो जीवन में सदैव भरोसे का काम करती रही हैं, करती रहती हैं, इसी से आशान्वित होकर हम अपनी कोशिशों को नअभ तक ले जाने का प्रयत्न सदैव करेंगे।

उड चल, हारिल, लिये हाथ में यही अकेला ओछा तिनका।
ऊषा जाग उठी प्राची में-कैसी बाट, भरोसा किन का!
शक्ति रहे तेरे हाथों में-छुट न जाय यह चाह सृजन की;
शक्ति रहे तेरे हाथों में-रुक न जाय यह गति जीवन की!

ऊपर-ऊपर-ऊपर-ऊपर-बढा चीरता जल दिड्मंडल
अनथक पंखों की चोटों से नभ में एक मचा दे हलचल!
तिनका? तेरे हाथों में है अमर एक रचना का साधन-
तिनका? तेरे पंजे में है विधना के प्राणों का स्पन्दन!

काँप न, यद्यपि दसों दिशा में तुझे शून्य नभ घेर रहा है,
रुक न, यदपि उपहास जगत का तुझ को पथ से हेर रहा है;
तू मिट्टी था, किन्तु आज मिट्टी को तूने बाँध लिया है,
तू था सृष्टि, किन्तु स्रष्टा का गुर तूने पहचान लिया है!

"हम अपनी पत्रिका के प्रथम अंक को इस आधुनिक हिंदी काव्य युग के नायक को समर्पित करते हैं। हम आशा करते हैं कि वो जहाँ कहीं भी होंगे हमको अपना शुभाशीष अवश्य देंगे। उनके शुभाशीष के साथ यह चरण आरंभ होगा।"

मातृभाषा प्रेम पर दोहे

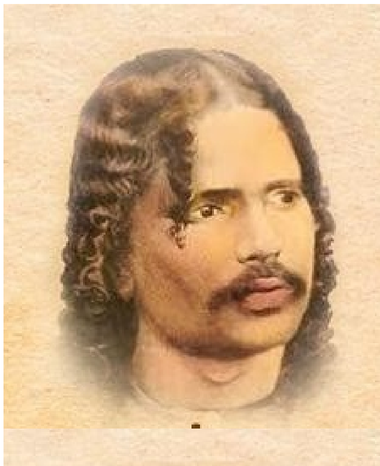

भारतेन्दु हरिश्चंद्र

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।

अंग्रेजी पढ़िके जदपि, सब गुन होत प्रवीन
पै निज भाषा-ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन।

उन्नति पूरी है तबहिं जब घर उन्नति होय
निज शरीर उन्नति किये, रहत मूढ़ सब कोय।

निज भाषा उन्नति बिना, कबहुं न ह्यैहैं सोय
लाख उपाय अनेक यों भले करे किन कोय।

इक भाषा इक जीव इक मति सब घर के लोग
तबै बनत है सबन सों, मिटत मूढ़ता सोग।

और एक अति लाभ यह, या में प्रगट लखात
निज भाषा में कीजिए, जो विद्या की बात।

तेहि सुनि पावै लाभ सब, बात सुनै जो कोय
यह गुन भाषा और महं, कबहूं नाहीं होय।

विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार
सब देसन से लै करहू, भाषा माहि प्रचार।

भारत में सब भिन्न अति, ताहीं सों उत्पात
विविध देस मतहू विविध, भाषा विविध लखात।

सब मिल तासों छांड़ि कै, दूजे और उपाय
उन्नति भाषा की करहु, अहो भ्रातगन आय।

मैने घुटने से कहा

सुदामा पाण्डेय 'धूमिल'

मैंने उसकी वरिज़श करते हुए कहा - प्यारे घुटने
तुम्हें सत्तर वर्ष चलना था
और तुम अभी से चोट खा गए
जबकि अभी '७० है। तुम्हें
भाषा के दलिद्दर से उबरना तुम्हें और
सारी कौम का सपना बनना था

कविता में कितना जहर है और कितना देश
अपनी गरीबी की मार का मुँह तोड़ने के लिए
एक शब्द कितना कारगर होता है।
तुम्हें यह सवाल तय करना था ।

अपनी भूख और बेकारी और नींद को
साहस की चौकी पर रख दो
और देखो कि दीवार पर उसका
क्या असर होता है।

गुस्से का रंग नीला या जोगिया
गुस्से का रंग बैंगनी या लाल
गुस्से का एक रंग ठीक उस तरह जैसे ख़ुसरो गुस्सा
या गुस्सा कंगाल

मुझे क़दम-क़दम पर

गजानन माधव मुक्तिबोध

मुझे क़दम-क़दम पर
चौराहे मिलते हैं
बाँहे फफ़ैलाए!!
एक पैर रखता हूँ
कि सौ राहें फूटतीं,

व मैं उन सब पर से गुज़रना चाहता हूँ;
बहुत अच्छे लगते हैं
उनके तजुर्बे और अपने सपने...
सब सच्चे लगते हैं;

अजीब-सी अकुलाहट दिल में उभरती है,
मैं कुछ गहरे में उतरना चाहता हूँ,
जाने क्या मिल जाए!!

मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में
चमकता हीरा है;
हर-एक छाती में आत्मा अधीरा है,
प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है,
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में
महाकाव्य पीड़ा है,
पलभर में सबसे गुज़रना चाहता हूँ,
प्रत्येक उर में से तिर जाना चाहता हूँ,
इस तरह खुद ही को दिए-दिए फिफ़रता हूँ,

अजीब है ज़िन्दगी!!
बेवकूफ़फ़ बनाने के खातिर ही
सब तरफ़फ़ अपने को लिए-लिए फिफ़रता हूँ;
और यह सब देख बड़ा मज़ा आता है
कि मैं ठगा जाता हूँ...
हृदय में मेरे ही,
प्रसन्न-चित एक मुर्ख बैठा है
हँस-हँसकर अश्रुपूर्ण, मत्त हुआ जाता है,
कि जगत...स्वायत्त हुआ जाता है।

कहानियां लेकर और
मुझको कुछ देकर ये चौराहे फ़ैलते
जहाँ ज़रा खड़े होकर
बातें कुछ करता हूँ...
...उपन्यास मिल जाते।

दुःख की कथाएँ, तरह-तरह की शिकायतें
अहंकार- विश्लेषण, चारित्रिक आख्यान,
ज़माने के जानदार सूरे व आयतें
सुनने को मिलती हैं!!

कविताएँ मुसकरा लाग-डाँट करती हैं
प्यार बात करती हैं।
मरने और जीने की जलती हुई सीढ़ियाँ
श्रद्धाएं चढ़ती हैं!!

घर पर भी, पग-पग पर चौराहे मिलते हैं,
बाँहें फैलाये रोज़ मिलती हैं सौ राहें,
शाखा-प्रशाखाएं निकलती रहती हैं
नव-नवीन रूप दृश्यवाले सौ-सौ विषय

रोज़-रोज़ मिलते हैं...
और, मैं सोच रहा कि
जीवन में आज के
लेखक की कठिनाई यह नहीं कि
कमी है विषयों की
वरन् यह कि आधिक्य उनका ही
उसको सताता है,
और, वह ठीक चुनाव कर नहीं पाता है !!

भिक्षुक

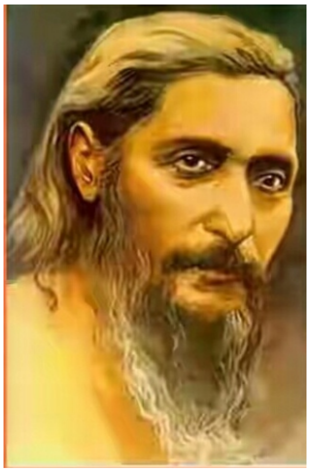

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

वह आता--
दो टूक कलेजे को करता, पछताता
पथ पर आता।

पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी भर दाने को भूख मिटाने को
मुँह फटी पुरानी झोली का फैलाता
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।

साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए,
बाएँ से वे मलते हुए पेट को चलते,
और दाहिना दया दृष्टि-पाने की ओर बढाए।
भूख से सूख ओठ जब जाते
दाता-भाग्य विधाता से क्या पाते?
घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते।
चाट रहे जूठी पत्तल वे सभी सडक़ पर खडे.हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अडे.हुए !

ठहरो ! अहो मेरे हृदय में है अमृत, मैं सींच दूँगा
अभिमन्यु जैसे हो सकोगे तुम
तुम्हारे दुख मैं अपने हृदय में खींच लूँगा।

आँसू

जयशंकर प्रसाद

इस करुणा कलित हृदय में
अब विकल रागिनी बजती
क्यों हाहाकार स्वरों में
वदिना असीम गरजती?

मानस सागर के तट पर
क्यों लोल लहर की घातें
कल कल ध्वनि से हैं कहती
कुछ विस्मृत बीती बातें?

आती हैं शून्य क्षितिज से
क्यों लौट प्रतिध्वनि मेरी
टकराती बिलखाती-सी
पगली-सी देती फेरी?

क्यों व्यथित व्योम गंगा-सी
छिटका कर दोनों छोरें
चेतना तरंगिनी मेरी
लेती हैं मृदल हिलोरें?

बस गई एक बस्ती हैं
स्मृतियों की इसी हृदय में
नक्षत्र लोक फैला है
जैसे इस नील निलय में।
छिल-छिल कर छाले फोडे.
मल-मल कर मृदुल चरण से
धुल-धुल कर वह रह जाते
आँसू करुणा के जल से ।

इस विकल वेदना को ले
किसने सुख को ललकारा
वह एक अबोध अकिंचन
बेसुध चैतन्य हमारा।

अभिलाषाओं की करवट
फिर सुप्त व्यथा का जगना
सुख का सपना हो जाना
भींगी पलकों का लगना।

इस हृदय कमल का घिरना
अलि अलकों की उलझन में
आँसू मरन्द का गिरना
मिलना निश्वास पवन में।

मादक थी मोहमयी थी
मन बहलाने की क्रीडा
अब हृदय हिला देती है
वह मधुर प्रेम की पीडा।

झंझा झकोर गर्जन था
बिजली सी थी नीरदमाला,
पाकर इस शून्य हृदय को
सबने आ डेरा डाला।

घिर जाती प्रलय घटाएँ
कुटिया पर आकर मेरी
तम चूर्ण बरस जाता था
छा जाती अधिक अँधेरी।

बिजली माला पहने फिर
मुसक्याता था आँगन में
हाँ, कौन बरस जाता था
रस बूँद हमारे मन में?

तुम सत्य रहे चिर सुन्दर!
मेरे इस मिथ्या जग के
थे केवल जीवन संगी
कल्याण कलित इस मग के।

कितनी निर्जन रजनी में
तारों के दीप जलाये
स्वर्गंगा की धारा में
उज्जवल उपहार चढायें।

गौरव था , नीचे आए
प्रियतम मिलने को मेरे
मै इठला उठा अकिंचन
देखे ज्यों स्वप्न सवेरे।
कुसुमाकर रजनी के जो
पिछले पहरों में खिलता
उस मृदुल शिरीष सुमन-सा
मैं प्रात धूल में मिलता।

व्याकुल उस मधु सौरभ से
मलयानिल धीरे-धीरे
निश्वास छोड.जाता हैं
अब विरह तरंगिनि तीरे।

चुम्बन अंकित प्राची का
पीला कपोल दिखलाता
मै कोरी आँख निरखता
पथ, प्रात समय सो जाता।

श्यामल अंचल धरणी का
भर मुक्ता आँसू कन से
छूँछा बादल बन आया
मैं प्रेम प्रभात गगन से।

मैथिलीशरण गुप्त

भारत माता का मंदिर यह

भारत माता का मंदिर यह
समता का संवाद जहाँ,
सबका शिव कल्याण यहाँ है
सभी प्रसाद यहाँ ।

जाति-धर्म या संप्रदाय का,
नहीं भेद-व्यवधान यहाँ,
सबका स्वागत, सबका आदर
सबका सम सम्मान यहाँ ।
राम, रहीम, बुद्ध, ईसा का,
एक सा ध्यान यहाँ,
भिन्न-भिन्न भव संस्कृतियों के
गुण गौरव का ज्ञान यहाँ ।

नहीं चाहिए बुद्धि बैर की
भला प्रेम का उन्माद यहाँ
सबका शिव कल्याण यहाँ है,
पावें सभी प्रसाद यहाँ ।

सब तीर्थों का एक तीर्थ यह
हृदय पवित्र बना लें हम
आओ यहाँ अजातशत्रु बन,
सबको मित्र बना लें हम ।
रेखाएँ प्रस्तुत हैं, अपने
मन के चित्र बना लें हम ।
सौ-सौ आदर्शों को लेकर
एक चरित्र बना लें हम ।

बैठो माता के आँगन में
नाता भाई-बहन का
समझे उसकी प्रसव वेदना
वही लाल है माई का
एक साथ मिल बाँट लो
अपना हर्ष विषाद यहाँ
सबका शिव कल्याण यहाँ है
पावें सभी प्रसाद यहाँ ।

मिला सेव्य का हमें पुज़ारी
सकल काम उस न्यायी का
मुक्ति लाभ कर्तव्य यहाँ है
एक एक अनुयायी का
कोटि-कोटि कंठों से मिलकर
उठे एक जयनाद यहाँ
सबका शिव कल्याण यहाँ है
पावें सभी प्रसाद यहाँ ।

मैंने आहुति बन कर देखा

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन
'अज्ञेय'

मैं कब कहता हूँ जग मेरी दुर्धर गति के अनुकूल बने,
मैं कब कहता हूँ जीवन-मरू नंदन-कानन का फूल बने?
काँटा कठोर है, तीखा है, उसमें उसकी मर्यादा है,
मैं कब कहता हूँ वह घटकर प्रांतर का ओछा फूल बने?

मैं कब कहता हूँ मुझे युद्ध में कहीं न तीखी चोट मिले?
मैं कब कहता हूँ प्यार करूँ तो मुझे प्राप्ति की ओट मिले?
मैं कब कहता हूँ विजय करूँ मेरा ऊँचा प्रासाद बने?
या पात्र जगत की श्रद्धा की मेरी धुंधली-सी याद बने?

पथ मेरा रहे प्रशस्त सदा क्यों विकल करे यह चाह मुझे?
नेतृत्व न मेरा छिन जावे क्यों इसकी हो परवाह मुझे?
मैं प्रस्तुत हूँ चाहे मेरी मिट्टी जनपद की धूल बने-
फिफ़र उस धूली का कण-कण भी मेरा गति-रोधक शूल बने!

अपने जीवन का रस देकर जिसको यत्नों से पाला है-
क्या वह केवल अवसाद-मलिन झरते आँसू की माला है?
वे रोगी होंगे प्रेम जिन्हें अनुभव-रस का कटु प्याला है-
वे मुर्दे होंगे प्रेम जिन्हें सम्मोहन कारी हाला है

मैंने विदग्ध हो जान लिया, अन्तिम रहस्य पहचान लिया-
मैंने आहुति बन कर देखा यह प्रेम यज्ञ की ज्वाला है!
मैं कहता हूँ, मैं बढता हूँ, मैं नभ की चोटी चढता हूँ
कुचला जाकर भी धूली-सा आंधी सा और उमडता हूँ

मेरा जीवन ललकार बने, असफ़लता ही असि-धार बने
इस निर्मम रण में पग-पग का रुकना ही मेरा वार बने!
भव सारा तुझपर है स्वाहा सब कुछ तप कर अंगार बने-
तेरी पुकार सा दुर्निवार मेरा यह नीरव प्यार बनें ।

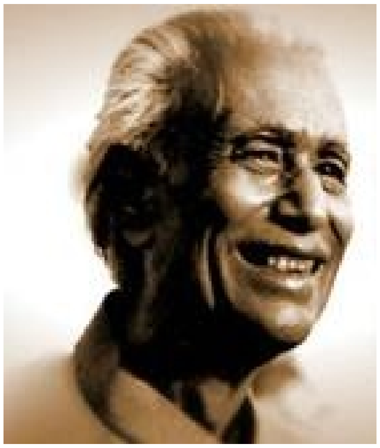

धर्मवीर भारती

थके हुए कलाकार से

सृजन की थकन भूल जा देवता!
अभी तो पडी है धरा अधबनी,

अभी तो पलक में नहीं खिल सकी
नवल कल्पना की मधुर चाँदनी

अभी अधखिली ज्योत्सना की कली
नहीं जिंदगी की सुरभि में सनी

अभी तो पडी है धरा अधबनी,
अधूरी धरा पर नहीं है कहीं

अभी स्वर्ग की नींव का भी पता!
सृजन की थकन भूल जा देवता!

रुका तू गया रुक जगत का सृजन
तिमिरमय नयन में डगर भूल कर

कहीं खो गई रोशनी की किरन
घने बादलों में कहीं सो गया

नयी सृष्टि का सप्तरंगी सपन
रुका तू गया रुक जगत का सृजन

अधूरे सृजन से निराशा भला
किसलिए जब अधूरी स्वयं पूर्णता
सृजन की थकन भूल जा देवता!

प्रलय से निराशा तुझे हो गई
सिसकती हुई साँस की जालियों में
सबल प्राण की अर्चना खो गई

प्रलय से निराशा तुझे हो गई
इसी ध्वंस में मूर्च्छिता हो कहीं

पडी हो, नयी जिंदगी; क्या पता?
सृजन की थकन भूल जा देवता

रात आधी खींचकर मेरी हथेली एक उँगली से लिखा था प्यार' तुमने

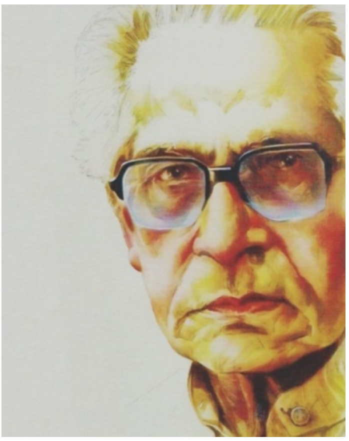

हरिवंशराय 'बच्चन'

रात आधी, खींच कर मेरी हथेली एक उंगली से लिखा था 'प्यार' तुमने।

फासला था कुछ हमारे बिस्तरों में
और चारों ओर दुनिया सो रही थी,
तारिकाएँ ही गगन की जानती हैं
जो दशा दिल की तुम्हारे हो रही थी,

मैं तुम्हारे पास होकर दूर तुमसे
अधजगा-सा और अधसोया हुआ सा,
रात आधी खींच कर मेरी हथेली
रात आधी, खींच कर मेरी हथेली एक उंगली से लिखा था 'प्यार' तुमने।

एक बिजली छू गई, सहसा जगा मैं,
कृष्णपक्षी चाँद निकला था गगन में,
इस तरह करवट पडी थी तुम कि आँसू
बह रहे थे इस नयन से उस नयन में,
मैं लगा दूँ आग इस संसार में है

प्यार जिसमें इस तरह असमर्थ कातर,
जानती हो, उस समय क्या कर गुज़रने
के लिए था कर दिया तैयार तुमने!
रात आधी, खींच कर मेरी हथेली एक उंगली से लिखा था 'प्यार' तुमने।

प्रात ही की ओर को है रात चलती
औ' उजाले में अंधेरा डूब जाता,
मंच ही पूरा बदलता कौन ऐसी,
खूबियों के साथ परदे को उठाता,

एक चेहरा-सा लगा तुमने लिया था,
और मैंने था उतारा एक चेहरा,
वो निशा का स्वप्न मेरा था कि अपने पर
गज़ब़ का था किया अधिकार तुमने।
रात आधी, खींच कर मेरी हथेली एक उंगली से लिखा था 'प्यार' तुमने।

और उतने फा़सले पर आज तक सौ
यत्न करके भी न आये फिर कभी हम,
फ़िक़र न आया वक्त वैसा, फिर न मौका
उस तरह का, फिर न लौटा चाँद निर्मम,
और अपनी वेदना मैं क्या बताऊँ,

क्या नहीं ये पंक्तियाँ खुद बोलती हैं--
बुझ नहीं पाया अभी तक उस समय जो
रख दिया था हाथ पर अंगार तुमने।
रात आधी, खींच कर मेरी हथेली एक उंगली से लिखा था 'प्यार' तुमने।

पुनः चमकेगा दिनकर

अटल बिहारी वाजपेयी

आज़ादी का दिन मना,
नई ग़ुलामी बीच;

सूखी धरती, सूना अंबर,
मन-आंगन में कीच;

मन-आंगम में कीच,
कमल सारे मुरझाए;

एक-एक कर बुझे दीप,
अंधियारे छाए;

कह कैदी कबिराय
न अपना छोटा जी कर;

चीर निशा का वक्ष
पुनः चमकेगा दिनकर।

शासन की बंदूक

बाबा नागार्जुन

खडी हो गई चाँपकर कंकालों की हूक
नभ में विपुल विराट-सी शासन की बंदूक

उस हिटलरी गुमान पर सभी रहें है थूक
जिसमें कानी हो गई शासन की बंदूक

बढी बधिरता दस गुनी, बने विनोबा मूक
धन्य-धन्य वह, धन्य वह, शासन की बंदूक

सत्य स्वयं घायल हुआ, गई अहिंसा चूक
जहाँ-तहाँ दगने लगी शासन की बंदूक

जली ठूँठ पर बैठकर गई कोकिला कूक
बाल न बाँका कर सकी शासन की बंदूक

सडक़ पर एक आदमी

अशोक वाजपेयी

वह जा रहा है
सडक़ पर
एक आदमी
अपनी जेब से निकालकर बीडी सुलगाता हुआ
धूप में-
इतिहास के अंधेरे
चिडिय़ों के शोर
पेडों में बिखरे हरेपन से बेखब़र
वह आदमी ...

बिजली के तारों पर बैठे पक्षी
उसे देखते हैं या नहीं - कहना मुश्किल है
हालांकि हवा उसकी बीडी के धुएं को
उडाक़र ले जा रही है जहां भी वह ले जा सकती है ....

वह आदमी
सडक़ पर जा रहा है
अपनी जिंदगी का दुख-सुख लिए
और ऐसे जैसे कि उसके ऐसे जाने पर
किसी को फर्क़ नहीं पडता
और कोई नहीं देखता उसे
न देवता न आकाश और न ही
संसार की चिंता करने वाले लोग

वह आदमी जा रहा है

जैसे शब्दकोष से
एक शब्द जा रहा है
लोप की ओर ....

और यह कविता न ही उसका जाना रोक सकती है
और न ही उसका इस तरह नामहीन
ओझल होना ......

कल जब शब्द नहीं होगा
और न ही यह आदमी
तब थोडी-सी जगह होगी
खाली-सी
पर अनदेखी
और एक और आदमी
उसे रौंदता हुआ चला जाएगा।

लोग टूट जाते हैं एक घर बनाने में

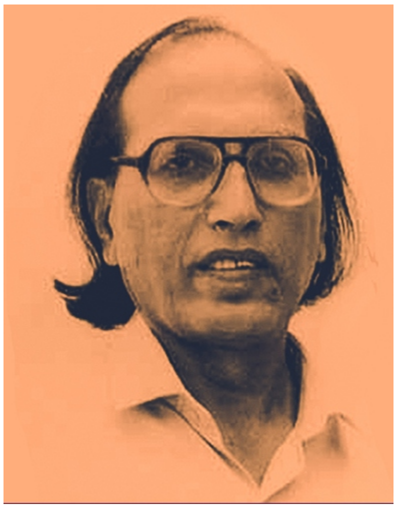

बशीर बद्र

लोग टूट जाते हैं एक घर बनाने में
तुम तरस नहीं खाते बस्तियाँ जलाने में

और जाम टूटेंगे इस शराब-ख़ाने में
मौसमों के आने में मौसमों के जाने में

हर धडक़ते पत्थर को लोग दिल समझते हैं
उम्र बीत जाती है दिल को दिल बनाने में

फ़ाख़्ता की मजबूरी ये भी कह नहीं सकती
कौन साँप रहता है उसके आशियाने में

दूसरी कोई लडक़ी ज़िंदगी में आयेगी
कितनी देर लगती है उसको भूल जाने में

तुम्हारे ख़त में नया इक सलाम

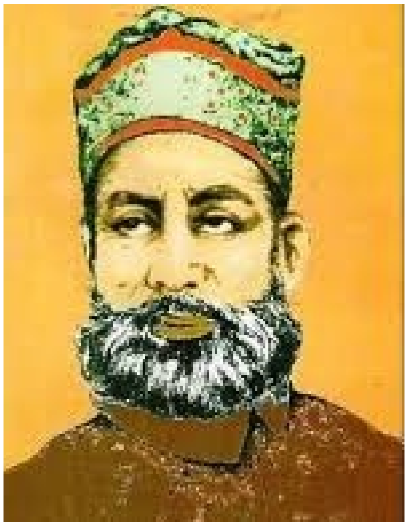

दाग देहलवी

तुम्हारे खत में नया इक सलाम किस का था
न था रकीब तो आखिर वो नाम किस का था।

वो कत्ल कर के हर किसी से पूछते हैं
ये काम किस ने किया है ये काम किस का था।

वफ़ा करेंगे ,निबाहेंगे, बात मानेंगे
तुम्हें भी याद है कुछ ये कलाम किस का था।

रहा न दिल में वो बेदर्द और दर्द रहा
मुकीम कौन हुआ है मुकाम किस का था।

न पूछ-ताछ थी किसी की वहाँ न आवभगत
तुम्हारी बज़्म में कल एहतमाम किस का था।

हमारे खत के तो पुर्जे किए पढा भी नहीं
सुना जो तुम ने बा-दिल वो पयाम किस का था।

इन्हीं सिफ़ात से होता है आदमी मशहूर
जो लुत्फ़ आप ही करते तो नाम किस का था।

तमाम बज़्म जिसे सुन के रह गई मुश्ताक
कहो, वो तजक़िरा-ए-नातमाम किसका था।

गुजर गया वो जमाना कहें तो किस से कहें
खय़ाल मेरे दिल को सुबह-ओ-शाम किस का था।

अगर्चे देखने वाले तेरे हजारों थे
तबाह हाल बहुत जेरे-बाम किसका था।

हर इक से कहते हैं क्या 'दाग' बेवफ़ा निकला
ये पूछे इन से कोई वो गुलाम किस का था।

मै राम पर लिखूं मेरी हिम्मत नहीं है कुछ

शम्स मीनाई

मैं राम पर लिखूं मेरी हिम्मत नहीं है कुछ
तुलसी ने बाल्मीकि ने छोड़ा नहीं है कुछ
फिर ऐसा कोई ख़ास कलम वर नहीं हूँ मैं
लेकिन वतन की ख़ाक से बाहर नहीं हूँ मैं

कोई पयाम ए हक़ हो वो सब है मेरे लिए
दुनिया का हर बुलंद अदब है मेरे लिए
वो राम जिसका नाम है जादू लिए हुए
लीला है जिसकी ॐ की खुशबू लिए हुए
अवतार बन के आयी थी ग़ैरत शबाब की
भारत में सबसे पहली किरण इंक़लाब की

मैं राम पर लिखूं मेरी हिम्मत नहीं है कुछ
तुलसी ने बाल्मीकि ने छोड़ा नहीं है कुछ

हर गाम जिसका सच का फरेरा ही बन गया
वनवास ज़िन्दगी का सवेरा ही बन गया
एक तर्ज एक एक बात है हर ख़ास ओ आम से
मिलते हैं कैसे कैसे सबक हमको राम से
ऊंचा उठे तो फ़र्क़ न लाये सऊर में
कोई बढ़े न हद से ज्यादा गुरुर में
जंगल में भी खिला तो रही फूल की महक
गुदरी में रह के लाल की जाती नहीं चमक
दिल से कभी ये प्यार निकाला न जायेगा
माँ बाप का ख्याल भी टाला न जायेगा
बेटा वही जो माँ बाप की फ़रमान मान ले
शौहर वही जो लाज पे मरने की ठान ले

और बाप वो जो बेटों को लव - कुश बना सके
उनको जगत में जीने के सब गुण सिखा सके
भाई जो चाहे भाई को तलवार की तरह
जरनल जो रखे फ़ौज को परिवार की तरह
राजा वही गरीब से इन्साफ़ कर सके
दलदल से जात पात से हरदम उबर सके
जो वर्ण भेद भाव के चक्कर को तोड़ दे
शबरी के बेर खा के ज़माने को मोड़ दे
इंसान हक़ की राह में हरदम जमा रहे
ये बात फिर फिजूल की लश्कर बड़ा रहे
ईमान हो तो सोने का अम्बार कुछ नहीं
हो आत्मबल तो लोहे के हथियार कुछ नहीं

रावण की मैंने माना की हस्ती नहीं रही
रावण का कारोबार है फैला हुआ अभी
छाया हर एक सितम जो अँधेरा घना हुआ
हिन्दुस्तान आज है लंका बना हुआ
जो जुल्म से डरे वो उपासक हो राम का
सोने पे जान दे वो उपासक हो राम का
वो राम जिसने जुल्म की बुनियाद ढाई थी
जिसके भगत ने सोने की लंका जलाई थी
हर आदमी ये सोचे जो होशो हवास है
वो राम के करीब है रावण के पास है
लोगों को राम से जो मोहब्बत है आज कल
पूजा नहीं अमल की जरुरत है आज कल

मैं राम पर लिखूं मेरी हिम्मत नहीं है कुछ
तुलसी ने बाल्मीकि ने छोड़ा नहीं है कुछ

हम ग़ज़ल में तेरा चर्चा नहीं होने देते

मेराज फ़ैज़ाबादी

हम ग़ज़ल में तेरा चर्चा नहीं होने देते
तेरी यादों को भी रुस्वा नहीं होने देते

कुछ तो हम खुद भी नहीं चाहते शोहरत अपनी
और कुछ लोग भी ऐसा नहीं होने देते

अज़मतें अपने चराग़ों की बचाने के लिए
हम किसी घर में उजाला नहीं होने देते

आज भी गांव में कुछ कच्चे मकानों वाले
घर में हम-साए के फ़ाक़ा नहीं होने देते

ज़िक्र करते हैं तेरा नाम नहीं लेते हैं
हम समंदर को जज़ीरा नहीं होने देते

मुझ को थकने नहीं देता ये ज़रूरत का पहाड़
मेरे बच्चे मुझे बूढ़ा नहीं होने देते

कितने ऐश से रहते होंगे

जौन एलिया

कितने ऐश से रहते होंगे कितने इतराते होंगे
जाने कैसे लोग वो होंगे जो उसको भाते होंगे

शाम हुए खुश़-बाश यहाँ के मेरे पास आ जाते हैं
मेरे बुझने का नज़्ज़ारा करने आ जाते होंगे

वो जो न आने वाला है ना उस से मुझको मतलब था
आने वालों से क्या मतलब आते हैं आते होंगे

उसकी याद की बाद-ए-सबा में और तो क्या होता होगा
यूँही मेरे बाल हैं बिखरे और बिखर जाते होंगे

यारो कुछ तो ज़िक्र करो तुम उस की कय़ामत बाँहों का
वो जो सिमटते होंगे उन में वो तो मर जाते होंगे

मेरा साँस उखडत़े ही सब बैन करेंगे रोएँगे
यानी मेरे बाद भी यानी साँस लिए जाते होंगे

निंदा रस

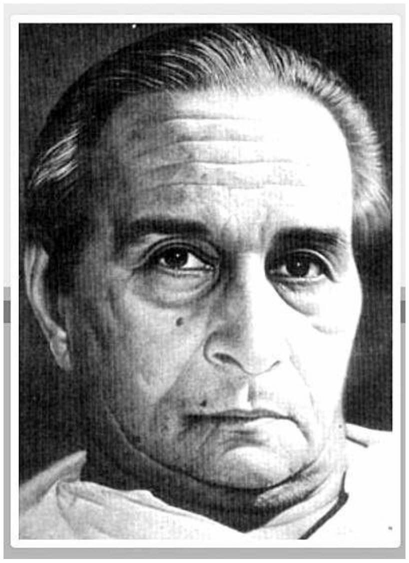

हरिशंकर परसाई

'क' कई महीने बाद आए थे। सुबह चाय पीकर अखबार देख रहा था कि वे तूफ़ान की तरह कमरे में घुसे, 'साइक्लोन' की तरह मुझे अपनी भुजाओं में जकड़ा तो मुझे धृतराष्ट्र की भुजाओं में जकड़े भीम के पुतले की याद आ गयी। यह धृतराष्ट्र की ही जकड़ थी। अंधे धृतराष्ट्र ने टटोलते हुए पूछा, ङ्ककहाँ है भीम? आ बेटा, तुझे कलेजे से लगा लूं।ङ्क और जब भीम का पुतला उनकी पकड़ में आ गया तो उन्होंने प्राणघाती स्नेह से उसे जकड़कर चूर कर डाला।

ऐसे मौक़े पर हम अक्सर अपने पुतले को अंकवार में दे देते हैं, हम अलग खड़े देखते रहते हैं। 'क' से क्या मैं गले मिला? क्या मुझे उसने समेटकर कलेजे से लगा लिया? हरगिज़ नहीं। मैंने अपना पुतला ही उसे दिया। पुतला इसलिए उसकी भुजाओं में सौंप दिया कि मुझे मालूम था कि मैं धृतराष्ट्र से मिल रहा हूँ। पिछली रात को एक मित्र ने बताया कि 'क' अपनी ससुराल आया है और 'ग़' के साथ बैठकर शाम को दो-तीन घंटे तुम्हारी निंदा करता रहा। इस सूचना के बाद जब आज सवेरे वह मेरे गले लगा तो मैंने शरीर से अपने मन को चुपचाप खिसका दिया और नि:स्नेह, कँटीली देह उसकी बाँहों में छोड़ दी। भावना के अगर काँटे होते तो उसे मालूम होता कि वह नागफ़नी को कलेजे से चिपटाए है। छल का धृतराष्ट्र जब आलिंगन करे, तो पुतला ही आगे बढ़ाना चाहिए।

पर वह मेरा दोस्त अभिनय में पूरा है। उसके आँसू भर नहीं आये, बाक़ी मिलन के हर्षोल्लास के सब चिह्न प्रकट हो गयेवह गहरी आत्मीयता की जकड, नयनों से छलकता वह असीम स्नेह और वह स्नेहसिक्त वाणी।

बोला, "अभी सुबह की गाड़ी से उतरा और एकदम तुमसे मिलने चला आया, जैसे आत्मा का एक खंड दूसरे खंड से मिलने को आतुर रहता है।" आते ही झूठ बोला कमबख्त। कल का आया है, यह मुझे मेरा मित्र बता गया था। इस झूठ में कोई प्रयोजन शायद उसका न रहा हो। कुछ लोग बड़े निदीष मिथ्यावादी होते हैं। वे आदतन, प्रकृति के वशीभूत झूठ बोलते हैं।

उनके मुख से निष्प्रयास, निष्प्रयोजन झूठ ही निकलता है। मेरे एक रिश्तेदार ऐसे हैं। वे अगर

बम्बई जा रहे हैं और उनसे पूछें, तो वे कहेंगे, 'कलकत्ता जा रहा हूँ।' ठीक बात उनके मुँह से निकल ही नहीं सकती। 'क' भी बड़ा निदोष, सहज-स्वाभाविक मिथ्यावादी है।

वह बैठा। कब आये? कैसे हो? वगैरह के बाद उसने 'ग़' की निन्दा आरम्भ कर दी। मनुष्य के लिए जो भी कर्म जघन्य हैं वे सब 'ग़' पर आरोपित करके उसने ऐसे गाढ़े काले तारकोल से उसकी तस्वीर खींची कि मैं यह सोचकर काँप उठा कि ऐसी ही काली तस्वीर मेरी 'ग़' के सामने इसने कल शाम को खींची होगी।

सुबह की बातचीत में 'ग़' प्रमुख विषय था। फ़िर तो जिस परिचित की बात निकल आती, उसी को चार-छह वाक्यों में धराशायी करके वह बढ़ लेता।

अद्भुत है मेरा यह मित्र। उसके पास दोषों का 'केटलॉग' है। मैंने सोचा कि जब वह हर परिचित की निंदा कर रहा है तो क्यों न मैं लगे हाथों विरोधियों की गत, इसके हाथों करा लूँ। मैं अपने विरोधियों का नाम लेता गया और वह उन्हें निंदा की तलवार से काटता चला। जैसे लकड़ी चीरने की आरा मशीन के नीचे मजदूर लकड़ी का लट्ठ खिसकाता जाता है और वह चीरता जाता है, वैसे ही मैंने विरोधियों के नाम एक-एक कर खिसकाए और वह उन्हें काटता गया। कैसा आनन्द था। दुश्मनों को रणक्षेत्र में एक के बाद एक काटकर गिरते हुए देखकर योध्दा को ऐसा ही सुख होता होगा।

मेरे मन में गत रात्रि के उस निंदक मित्र के प्रति मेल नहीं रहा। दोनों एक हो गए। भेद तो रात्रि के अंधकार में ही मिटता है, दिन के उजाले में भेद स्पष्ट हो जाते हैं। निंदा का ऐसा ही भेद-नाशक अँधेरा होता है। तीन-चार घंटे बाद, जब वह विदा हुआ तो हम लोगों के मन में बड़ी शांति और तुष्टि थी।

निंदा की ऐसी ही महिमा है। दो-चार निन्दकों को एक जगह बैठकर निंदा में निमग्न देखिए और तुलना कीजिए कि ईश्वर-भक्तों से जो रामधुन लगा रहे हैं। निन्दकों की सी एकाग्रता, परस्पर आत्मीयता, निमग्नता भक्तों में दुर्लभ है। इसीलिये संतों ने निन्दकों को 'आँगन कुटी छवाय' पास रखने की सलाह दी है।

कुछ 'मिशनरी' निन्दक मैंने देखे हैं। उनका किसी से बैर नहीं, द्वेष नहीं। वे किसी का बुरा नहीं सोचते। पर चौबीसों घंटे वे निंदा कर्म में बहुत पवित्र भाव से लगे रहते हैं। उनकी नितांत निर्लिप्तता, निष्पक्षता इसी से मालूम होती है कि वे प्रसंग आने पर अपने आप की पगड़ी भी उसी आनन्द से उछालते हैं, जिस आनन्द से अन्य लोग दुश्मन की। निंदा इनके लिए 'टॉनिक' होती है।

ट्रेड यूनियन के इस ज़माने में निन्दकों के संघ बन गए हैं। संघ के सदस्य जहाँ-तहां से खबर

ें लाते हैं और अपने संघ के प्रधान को सौंपते हैं। यह कच्चा माल हुआ। अब प्रधान उनका पक्का माल बनाएगा और सब सदस्यों को 'बहुजन हिताय' मुफ्त बांटने के लिए दे देगा। यह फ़ुरसत का काम है, इसलिए जिनके पास कुछ और करने को नहीं होता, वे इसे बड़ी खूबी से करते हैं। एक दिन हमसे ऐसे एक संघ के अध्यक्ष ने कहा, ङ्गयार आजकल लोग तुम्हारे बारे में बहुत बुरा-बुरा कहते हैं।ङ्ग हमने कहा, ङ्गआपके बारे में मुझसे कोई भी बुरा नहीं कहता। लोग जानते हैं कि आपके कानों के घूरे में इस तरह का कचरा मज़े में डाला जा सकता है।

ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निंदा भी होती है। लेकिन इसमें वो मज़ा नहीं जो मिशनरी भाव से निंदा करने में आता है। इस प्रकार का निन्दक बड़ा दुखी होता है। ईर्ष्या-द्वेष से चौबीस घंटे जलता है और निंदा का जल छिड़ककर कुछ शांति अनुभव करता है। ऐसा निन्दक बड़ा दयनीय होता है। अपनी अक्षमता से पीड़ित वह बेचारा दूसरे की सक्षमता के चाँद को देखकर सारी रात श्वान जैसा भौंकता है। ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निन्दा करने वाले को कोई दंड देने की ज़रुरत नहीं है। वह निन्दक बेचारा स्वयं दण्डित होता है। आप चैन से सोइए और वह जलन के कारण सो नहीं पाता। उसे और क्या दंड चाहिए ? निरन्तर अच्छे काम करते जाने से उसका दंड भी सख्त होता जाता है। जैसे एक कवि ने एक अच्छी कविता लिखी, ईर्ष्याग्रस्त निन्दक को कष्ट होगा। अब अगर एक और अच्छी लिख दी तो उसका कष्ट दुगना हो जाएगा।

निन्दा का उद्गम ही हीनता और कमजोरी से होता है। मनुष्य अपनी हीनता से दबता है। वह दूसरों की निन्दा करके ऐसा अनुभव करता है कि वे सब निकृष्ट हैं और वह उनसे अच्छा है। उसके अहं की इससे तुष्टि होती है। बड़ी लकीर को कुछ मिटाकर छोटी लकीर बड़ी बनती है। ज्यों-ज्यों कर्म क्षीण होता जाता है, त्यों-त्यों निंदा की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है। कठिन कर्म ही ईर्ष्या-द्वेष और उनसे उत्पन्न निंदा को मारता है। इन्द्र बड़ा ईर्ष्यालु माना जाता है, क्योंकि वह निठल्ला है। स्वर्ग में देवताओं को बिना उगाया अन्न, बे बनाया महल और बिन बोये फ़ल मिलते हैं। अकर्मण्यता में उन्हें अप्रतिष्ठित होने का भय बना रहता है, इसलिए कमी मनुष्यों से उन्हें ईर्ष्या होती है।

निंदा कुछ लोगों की पूंजी होती है। बड़ा लम्बा-चौड़ा व्यापार फैलाते हैं वे इस पूंजी से। कई लोगों की प्रतिष्ठा ही दूसरों की कलंक-कथाओं के परायण पर आधारित होती है। बड़े रस-विभोर होकर वे जिस-तिस की सत्य कल्पित कलंक-कथा सुनते हैं और स्वयं को पूर्ण संत समझने की तुष्टि का अनुभव करते हैं।

आप इनके पास बैठिये और सुन लीजिए, ङ्गबड़ा ख़राब ज़माना आ गया। तुमने सुना? फ़लाँ और अमुक.....।ङ्ग अपने चरित्र पर आँख डालकर देखने की उन्हें फ़ुरसत नहीं होती। एक

कहानी याद आ रही है। एक स्त्री किसी सहेली के पति की निन्दा अपने पति से कर रही है। वह बड़ा उचक्का, दगाबाज़ आदमी है। बेईमानी से पैसा कमाता है। कहती है कि मैं उस सहेली की जगह होती तो ऐसे पति को त्याग देती। तब उसका पति उसके सामने यह रहस्य खोलता है कि वह स्वयं बेईमानी से इतना पैसा कमाता है। सुनकर स्त्री स्तब्ध रह जाती है। क्या उसने पति को त्याग दिया? जी हाँ, वह दूसरे कमरे में चली गई।

कभी-कभी ऐसा भी होता है हममें जो करने की क्षमता नहीं है, वह यदि कोई करता है तो हमारे पिलपिले अहं को धक्का लगता है, हममें हीनता और ग्लानि आती है। तब हम उसकी निंदा करके उससे अपने को अच्छा समझकर तुष्ट होते हैं।
उस मित्र की मुलाक़ात के क़रीब दस-बारह घंटे बाद यह सब मन में आ रहा है। अब कुछ तटस्थ हो गया हूँ। सुबह जब उसके साथ बैठा था तब मैं स्वयं निंदा के 'काला सागर' में डूबता-उतराता था, कल्लोल कर रहा था। बड़ा रस है न निन्दा में। सूरदास ने इसलिए 'निन्दा सबद रसाल' कहा है।

आत्माराम

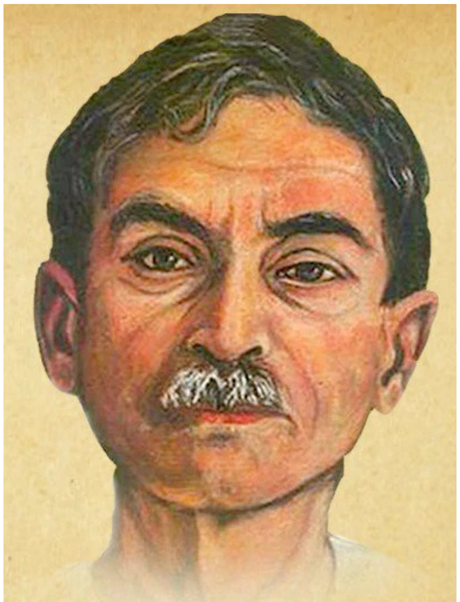

मुंशी प्रेमचंद

वेदों-ग्राम में महादेव सोनार एक सुविख्यात आदमी था। वह अपने सायबान में प्रातः से संध्या तक अँगीठी के सामने बैठा हुआ खटखट किया करता था। यह लगातार ध्वनि सुनने के लोग इतने अभ्यस्त हो गये थे कि जब किसी कारण से वह बंद हो जाती, तो जान पड़ता था, कोई चीज़ गायब हो गयी। वह नित्य-प्रति एक बार प्रातःकाल अपने तोते का पिंजड़ा लिए कोई भजन गाता हुआ तालाब की ओर जाता था। उस धुँधले प्रकाश में उसका जर्जर शरीर, पोपला मुँह और झुकी हुई कमर देख कर किसी अपरिचित मनुष्य को उसके पिशाच होने का भ्रम हो सकता था। ज्यों ही लोगों के कानों में आवाज आती-'सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता', लोग समझ जाते कि भोर हो गयी।

महादेव का पारिवारिक जीवन सुखमय न था। उसके तीन पुत्र थे, तीन बहुएँ थीं, दर्जनों नाती-पोते थे, लेकिन उसके बोझ को हलका करनेवाला कोई न था। लड़के कहते-'जब तक दादा जीते हैं, हम जीवन का आनंद भोग लें, फिर तो यह ढोल गले पड़ेगी ही।' बेचारे महादेव को कभी-कभी निराहार ही रहना पड़ता। भोजन के समय उसके घर में साम्यवाद का ऐसा गगनभेदी निर्घोष होता कि वह भूखा ही उठ जाता, और नारियल का हुक्का पीता हुआ सो जाता। उसका व्यावसायिक जीवन और भी अशांतिकारक था। यद्यपि वह अपने काम में निपुण था, उसकी खटाई औरों से कहीं ज्यादा शुद्धिकारक और उसकी रासायनिक क्रियाएँ कहीं ज्यादा कष्टसाध्य थीं, तथापि उसे आये दिन शक्की और धैर्य-शून्य प्राणियों के अपशब्द सुनने पड़ते थे। पर महादेव अविचलित गाम्भीर्य से सिर झुकाये सब कुछ सुना करता था। ज्यों ही यह कलह शांत होता, वह अपने तोते की ओर देख कर पुकार उठता-'सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता।' इस मंत्र को जपते ही उसके चित्त को पूर्ण शांति प्राप्त हो जाती थी।

२

एक दिन संयोगवश किसी लड़के ने पिंजड़े का द्वार खोल दिया। तोता उड़ गया। महादेव ने सिर उठाकर जो पिंजड़े की ओर देखा, तो उसका कलेजा सन्न-से हो गया। तोता कहाँ गया। उसने फिर पिंजड़े को देखा, तोता गायब था ! महादेव घबड़ा कर उठा और इधर-उधर खपरैलों पर निगाह दौड़ाने लगा। उसे संसार में कोई वस्तु अगर प्यारी थी, तो वह यही तोता। लड़के-बालों,

नाती-पोतों से उसका जी भर गया था। लड़कों की चुलबुल से उसके काम में विघ्न पड़ता था। बेटों से उसे प्रेम न था; इसलिए नहीं कि वे निकम्मे थे, बल्कि इसलिए कि उनके कारण वह अपने आनंददायी कुल्हड़ों की नियमित संख्या से वंचित रह जाता था। पड़ोसियों से उसे चिढ़ थी, इसलिए कि वे अँगीठी से आग निकाल ले जाते थे। इन समस्त विघ्न-बाधाओं से उसके लिए कोई पनाह थी, तो वह यही तोता था। इससे उसे किसी प्रकार का कष्ट न होता था। वह अब उस अवस्था में था जब मनुष्य को शांति भोग के सिवा और कोई इच्छा नहीं रहती।

तोता एक खपरैल पर बैठा था। महादेव ने पिंजरा उतार लिया और उसे दिखा कर कहने लगा- 'आ-आ' 'सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता।' लेकिन गाँव और घर के लड़के एकत्र हो कर चिल्लाने और तालियाँ बजाने लगे। ऊपर से कौओं ने काँव-काँव की रट लगायी ? तोता उड़ा और गाँव से बाहर निकल कर एक पेड़ पर जा बैठा। महादेव खाली पिंजड़ा लिये उसके पीछे दौड़ा, सो दौड़ा। लोगों को उसकी द्रुतगामिता पर अचम्भा हो रहा था। मोह की इससे सुंदर, इससे सजीव, इससे भावमय कल्पना नहीं की जा सकती।

दोपहर हो गयी थी। किसान लोग खेतों से चले आ रहे थे। उन्हें विनोद का अच्छा अवसर मिला। महादेव को चिढ़ाने में सभी को मजा आता था। किसी ने कंकड़ फ्फ़ेंके, किसी ने तालियाँ बजायीं। तोता फ्फ़िर उड़ा और वहाँ से दूर आम के बाग में एक पेड़ की फ्फ़ुनगी पर जा बैठा। महादेव फ्फ़िर खाली पिंजड़ा लिये मेंढक की भाँति उचकता चला। बाग में पहुँचा तो पैर के तलुओं से आग निकल रही थी; सिर चक्कर खा रहा था। जब जरा सावधान हुआ, तो फ्फ़िर पिंजड़ा उठा कर कहने लगा-'सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता।' तोता फ्फ़ुनगी से उतर कर नीचे की एक डाल पर आ बैठा, किन्तु महादेव की ओर सशंक नेत्रों से ताक रहा था। महादेव ने समझा, डर रहा है। वह पिंजड़े को छोड़ कर आप एक दूसरे पेड़ की आड़ में छिप गया। तोते ने चारों ओर गौर से देखा, निश्शंक हो गया, उतरा और आ कर पिंजड़े के ऊपर बैठ गया। महादेव का हृदय उछलने लगा। 'सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता' का मंत्र जपता हुआ धीरे-धीरे तोते के समीप आया और लपका कि तोते को पकड़ ले; किन्तु तोता हाथ न आया, फ्फ़िर पेड़ पर जा बैठा।

शाम तक यही हाल रहा। तोता कभी इस डाल पर जाता, कभी उस डाल पर। कभी पिंजड़े पर आ बैठता, कभी पिंजड़े के द्वार पर बैठ अपने दाना-पानी की प्यालियों को देखता, और फ्फ़िर उड़ जाता। बु्ा अगर मूर्तिमान मोह था, तो तोता मूर्तिमयी माया। यहाँ तक कि शाम हो गयी। माया और मोह का यह संग्राम अंधकार में विलीन हो गया।

३

रात हो गयी ! चारों ओर निविड़ अंधकार छा गया। तोता न जाने पत्तों में कहाँ छिपा बैठा था। महादेव जानता था कि रात को तोता कहीं उड़ कर नहीं जा सकता। और न पिंजड़े ही में आ सकता है, फ़िर भी वह उस जगह से हिलने का नाम न लेता था। आज उसने दिन भर कुछ नहीं खाया। रात के भोजन का समय भी निकल गया, पानी की बूँद भी उसके कंठ में न गयी; लेकिन उसे न भूख थी, न प्यास ! तोते के बिना उसे अपना जीवन निस्सार, शुष्क और सूना जान पड़ता था। वह दिन-रात काम करता था; इसलिए कि यह उसकी अंतःप्रेरणा थी; जीवन के और काम इसलिए करता था कि आदत थी। इन कामों में उसे अपनी सजीवता का लेश-मात्र भी ज्ञान न होता था। तोता ही वह वस्तु था, जो उसे चेतना की याद दिलाता था। उसका हाथ से जाना जीव का देह-त्याग करना था।

महादेव दिन भर का भूखा-प्यासा, थका-माँदा, रह-रह कर झपकियाँ ले लेता था; किन्तु एक क्षण में फ़िर चौंक कर आँखें खोल देता और उस विस्तृत अंधकार में उसकी आवाज़ सुनायी देती-'सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता'।

आधी रात गुजर गयी थी। सहसा वह कोई आहट पा कर चौंका। देखा, एक दूसरे वृक्ष के नीचे एक धुँधला दीपक जल रहा है, और कई आदमी बैठे हुए आपस में कुछ बातें कर रहे हैं। वे सब चिलम पी रहे थे। तमाखू की महक ने उसे अधीर कर दिया। उच्च स्वर से बोला-'सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता' और उन आदमियों की ओर चिलम पीने चला गया; किंतु जिस प्रकार बंदूक की आवाज़ सुनते ही हिरन भाग जाते हैं उसी प्रकार उसे आते देख सब-के-सब उठ कर भागे। कोई इधर गया, कोई उधर। महादेव चिल्लाने लगा-'ठहरो-ठहरो' एकाएक उसे ध्यान आ गया, ये सब चोर हैं। वह जोर से चिल्ला उठा-'चोर-चोर, पकड़ो-पकड़ो।' चोरों ने पीछे फ़िर कर न देखा।

महादेव दीपक के पास गया, तो उसे एक कलसा रखा हुआ मिला जो मोर्चे से काला हो रहा था। महादेव का हृदय उछलने लगा। उसने कलसे में हाथ डाला, तो मोहरें थीं। उसने एक मोहर बाहर निकाली और दीपक के उजाले में देखा। हाँ, मोहर थी। उसने तुरंत कलसा उठा लिया, और दीपक बुझा दिया और पेड़ के नीचे छिप कर बैठ रहा। साह से चोर बन गया।

उसे फिर शंका हुई, ऐसा न हो, चोर लौट आवें, और मुझे अकेला देख कर मोहरें छीन लें। उसने कुछ मोहर कमर में बाँधीं, फ़िर एक सूखी लकड़ी से जमीन की मिट्टी हटा कर कई गड्ढे बनाये, उन्हें मोहरों से भर कर मिट्टी से ढँक दिया।

४

महादेव के अंतर्नेत्रों के सामने अब एक दूसरा जगत था, चिंताओं और कल्पना से परिपूर्ण। यद्यपि अभी कोष के हाथ से निकल जाने का भय था, पर अभिलाषाओं ने अपना काम शुरूकर दिया। एक पक्का मकान बन गया, सराफ़े की एक भारी दूकान खुल गयी, निज सम्बन्धियों से फ़िर नाता जुड़ गया, विलास की सामग्रियाँ एकत्रित हो गयीं। तब तीर्थ-यात्रा करने चले, और वहाँ से लौट कर बड़े समारोह से यज्ञ, ब्रह्मभोज हुआ। इसके पश्चात एक शिवालय और कुआँ बन गया, एक बाग भी लग गया और वह नित्यप्रति कथा-पुराण सुनने लगा। साधु-सन्तों का आदर-सत्कार होने लगा।

अकस्मात उसे ध्यान आया। कहीं चोर आ जायँ, तो मैं भागूँगा क्योंकर ? उसने परीक्षा करने के लिए कलसा उठाया। और दो सौ पग तक बेतहाशा भागा हुआ चला गया। जान पड़ता था, उसके पैरों में पर लग गये हैं। चिंता शांत हो गयी। इन्हीं कल्पनाओं में रात व्यतीत हो गयी। उषा का आगमन हुआ, हवा जगी, चिड़ियाँ गाने लगीं। सहसा महादेव के कानों में आवाज़ आयी-

सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता,
राम के चरण में चित्त लागा।

यह बोल सदैव महादेव की जिह्वा पर रहता था। दिन में सहस्त्रो ही बार ये शब्द उसके मुँह से निकलते थे, पर उनका धार्मिक भाव कभी भी उसके अंतःकरण को स्पर्श न करता था। जैसे किसी बाजे से राग निकलता है, उसी प्रकार उसके मुँह से यह बोल निकलता था। निरर्थक और प्रभाव-शून्य। तब उसका हृदय-रूपी वृक्ष पत्र-पल्लव विहीन था। यह निर्मल वायु उसे गुंजरित न कर सकती थी; पर अब उस वृक्ष में कोपलें और शाखाएँ निकल आयी थीं। इस वायु-प्रवाह से झूम उठा, गुंजित हो गया।

अरुणोदय का समय था। प्रकृति एक अनुरागमय प्रकाश में डूबी हुई थी। उसी समय तोता पैरों को जोड़े हुए ऊँची डाल से उतरा, जैसे आकाश से कोई तारा टूटे और आ कर पिंजड़े में बैठ गया। महादेव प्रफ्फ़ुल्लित हो कर दौड़ा और पिंजड़े को उठा कर बोला-'आओ आत्माराम, तुमने कष्ट तो बहुत दिया, पर मेरा जीवन भी सफ्फ़ल कर दिया। अब तुम्हें चाँदी के पिंजड़े में रखूँगा और सोने से मढ़ दूँगा।' उसके रोम-रोम से परमात्मा के गुणानुवाद की ध्वनि निकलने लगी। प्रभु तुम कितने दयावान हो ! यह तुम्हारा असीम वात्सल्य है, नहीं तो मुझ पापी, पतित प्राणी कब इस कृपा के योग्य था ! इन पवित्र भावों से उसकी आत्मा विह्वल हो गयी ! वह अनुरक्त हो कर कह उठा-

'सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता,
राम के चरण में चित्त लागा।'

उसने एक हाथ में पिंजड़ा लटकाया, बगल में कलसा दबाया और घर चला।

५

महादेव घर पहुँचा, तो अभी कुछ अँधेरा था। रास्ते में एक कुत्ते के सिवा और किसी से भेंट न हुई, और कुत्ते को मोहरों से विशेष प्रेम नहीं होता। उसने कलसे को एक नाद में छिपा दिया, और उसे कोयले से अच्छी तरह ढँक कर अपनी कोठरी में रख आया। जब दिन निकल आया तो वह सीधे पुरोहित के घर पहुँचा। पुरोहित पूजा पर बैठे सोच रहे थे-कल ही मुकदमे की पेशी है और अभी तक हाथ में कौड़ी भी नहीं-यजमानों में कोई साँस भी नहीं लेता। इतने में महादेव ने पालागन की। पंडित जी ने मुँह फफ़ेर लिया। यह अंमगलमूर्ति कहाँ से आ पहुँची, मालूम नहीं, दाना भी मयस्सर होगा या नहीं। रुष्ट हो कर पूछा-क्या है जी, क्या कहते हो। जानते नहीं, हम इस समय पूजा पर रहते हैं।

महादेव ने कहा-महाराज, आज मेरे यहाँ सत्यनारायण की कथा है।

पुरोहित जी विस्मित हो गये। कानों पर विश्वास न हुआ। महादेव के घर कथा का होना उतनी ही असाधारण घटना थी, जितनी अपने घर से किसी भिखारी के लिए भीख निकालना। पूछा-आज क्या है ?

महादेव बोला-कुछ नहीं, ऐसी इच्छा हुई कि आज भगवान् की कथा सुन लूँ।

प्रभात ही से तैयारी होने लगी। वेदों के निकटवती गाँवों में सुपारी फिफ़री। कथा के उपरांत भोज का भी नेवता था। जो सुनता आश्चर्य करता। आज रेत में दूब कैसे जमी।

संध्या समय जब सब लोग जमा हुए, और पंडित जी अपने सिंहासन पर विराजमान हुए, तो महादेव खड़ा होकर उच्च स्वर में बोला-भाइयो, मेरी सारी उम्र छल-कपट में कट गयी। मैंने न जाने कितने आदमियों को दगा दी, कितने खरे को खोटा किया; पर अब भगवान् ने मुझ पर दया की है, वह मेरे मुँह की कालिख को मिटाना चाहते हैं। मैं आप सब भाइयों से ललकार कर कहता हूँ कि जिसका मेरे जिम्मे जो कुछ निकलता हो, जिसकी जमा मैंने मार ली हो, जिसके चोखे माल को खोटा कर दिया हो, वह आ कर अपनी एक-एक कौड़ी चुका ले, अगर कोई यहाँ

न आ सका हो, तो आप लोग उससे जा कर कह दीजिए, कल से एक महीने तक, जब जी चाहे, आये और अपना हिसाब चुकता कर ले। गवाही-साखी का काम नहीं।

सब लोग सन्नाटे में आ गये। कोई मार्मिक भाव से सिर हिला कर बोला-हम कहते न थे। किसी ने अविश्वास से कहा-क्या खा कर भरेगा, हजारों का टोटल हो जायेगा।

एक ठाकुर ने ठठोली की-और जो लोग सुरधाम चले गये।

महादेव ने उत्तर दिया-उसके घर वाले तो होंगे।
किन्तु इस समय लोगों को वसूली की इतनी इच्छा न थी, जितनी यह जानने की कि इसे इतना धन मिल कहाँ से गया। किसी को महादेव के पास आने का साहस न हुआ। देहात के आदमी थे, गड़े मुर्दे उखाड़ना क्या जानें। फिर प्रायः लोगों को याद भी न था कि उन्हें महादेव से क्या पाना है, और ऐसे पवित्र अवसर पर भूल-चूक हो जाने का भय उनका मुँह बन्द किये हुए था। सबसे बड़ी बात यह थी कि महादेव की साधुता ने उन्हें वशीभूत कर लिया था।

अचानक पुरोहित जी बोले-तुम्हें याद है, मैंने एक कंठा बनाने के लिए सोना दिया था, तुमने कई माशे तौल में उड़ा दिये थे।

महादेव-हाँ, याद है, आपका कितना नुकसान हुआ होगा ?

पुरोहित-पचास रुपये से कम न होगा।

महादेव ने कमर से दो मोहरें निकालीं और पुरोहित जी के सामने रख दीं।

पुरोहित जी की लोलुपता पर टीकाएँ होने लगीं। यह बेईमानी है, बहुत हो, तो दो-चार रुपये का नुकसान हुआ होगा। बेचारे से पचास रुपये ऐंठ लिये। नारायण का भी डर नहीं। बनने को पंडित, पर नीयत ऐसी खराब ! राम-राम !!

लोगों को महादेव पर एक श्रद्धा-सी हो गयी। एक घंटा बीत गया पर उन मनुष्यों में से एक भी खड़ा न हुआ। तब महादेव ने फिर कहा-मालूम होता है, आप लोग अपना-अपना हिसाब भूल गये हैं, इसलिए आज कथा होने दीजिए। मैं एक महीने तक आपकी राह देखूँगा। इसके पीछे तीर्थ-यात्रा करने चला जाऊँगा। आप सब भाइयों से मेरी विनती है कि आप मेरा उद्धार

करें।

एक महीने तक महादेव लेनदारों की राह देखता रहा। रात को चोरों के भय से नींद न आती। अब वह कोई काम न करता। शराब का चसका भी छूटा। साधु-अभ्यागत जो द्वार पर आ जाते, उनका यथायोग्य सत्कार करता। दूर-दूर उसका सुयश फैल गया। यहाँ तक कि महीना पूरा हो गया, और एक आदमी भी हिसाब लेने न आया। अब महादेव को ज्ञान हुआ कि संसार में कितना धर्म, कितना सद्व्यवहार है। अब उसे मालूम हुआ कि संसार बुरों के लिए बुरा है और अच्छों के लिए अच्छा।

६

इस घटना को हुए पचास वर्ष बीत चुके हैं। आप वेदों जाइये, तो दूर ही से एक सुनहला कलश दिखायी देता है। वह ठाकुरद्वारे का कलश है। उससे मिला हुआ एक पक्का तालाब है, जिसमें खूब कमल खिले रहते हैं। उसकी मछलियाँ कोई नहीं पकड़ता, तालाब के किनारे एक विशाल समाधि है। यही आत्माराम का स्मृति-चिह्न है, उसके सम्बन्ध में विभिन्न किंवदंतियाँ प्रचलित हैं। कोई कहता है, वह रत्नजड़ित पिंजड़ा स्वर्ग को चला गया, कोई कहता, वह 'सत्त गुरुदत्त' कहता हुआ अंतर्धान हो गया, पर यथार्थ यह है कि उस पक्षी-रूपी चंद्र को किसी बिल्ली-रूपी राहु ने ग्रस लिया। लोग कहते हैं, आधी रात को अभी तक तालाब के किनारे आवाज़ आती है -

'सत्त गुरुदत्त शिवदत्त दाता,
राम के चरण में चित्त लागा।'

महादेव के विषय में भी कितनी ही जन-श्रुतियाँ हैं। उनमें सबसे मान्य यह है कि आत्माराम के समाधिस्थ होने के बाद वह कई संन्यासियों के साथ हिमालय चला गया, और वहाँ से लौट कर न आया। उसका नाम आत्माराम प्रसिद्ध हो गया।

नवोदित पुष्प

मै भी ईश्क करना चाहता हूँ

कोई मेरे प्यार में पागल हो के,
मुझको अपना ले सबकुछ खो के
राधा सी मधुबन में भटके
मीरा जैसी श्याम को भजते
यमुना तट पर करे ठिठोली
मेरी बंसी धुन पर मटके
कुछ ऐसी जानी पहचानी
गीत मैं भी रचना चाहता हूँ

फ़फ़ाल्गुन के रंगों से खेले
आसमान में झूला झूले
रंगों की घनघोर घटाऐं
हौले हौले लब को छू ले
बारिश की वो नटखट बूँदें
जिसके बचकाने राज खो ले
मैं भी कोई ऐसी बचकानी
हरकत करना चाहता हूँ
मैं भी ईश्क करना चाहता हूँ

लहरों सी बेपरवाह रवानी
जैसे अभी अभी आई हो जवानी
चंदन कुसुम सी खुशबू उसकी
कलियों सी मुस्कान सुहानी
मन बार बार छूने को चाहे
वो रोके मैं करूँनादानी

मैं भी ऐसी रोक टोक से
वाकिफ होना चाहता हूँ
मैं भी ईश्क करना चाहता हूँ

बिन बोले वो मुझको पढ़ लें
दिल की सारी बात समझ लें
जो बातें हूँ दुनिया से छुपाए
आके सारे राज समझ लें
मेरे दिल के घावों पर वो
कुछ अपने दिल के मलहम कर दे
मैं भी ऐसी चोटों से
खारिज होना चाहता हूँ
मैं भी ईश्क करना चाहता हूँ

जो आँखो की भाषा बोले
धुन जिसकी सुन तनमन बोले
पल्कों होंठों जुल्फ़ों से जो
दिल के सब जज्बात टटोले
कस्तूरी जिसने हो छुपाई
वो खुद अपनी बाहें खोले
मैं भी ऐसी कथित कहानी
खुद में जीना चाहता हूँ
मैं भी ईश्क करना चाहता हूँ

हर्ष कुमार 'खुदरंग शायर'

श्रीकृष्ण- गोपिका संवाद

जब भगवान श्रीकृष्ण मथुरा चले आते हैं, तब एक रोज रात में एक गोपिका स्वप्न में प्रश्न करती है कि,

हे ! कृष्ण कहो तुम कैसे हो
क्या चैन तुम्हें आता है
हम सबको तुमने भुला दिया
क्या यही तुम्हार नाता है।

इसके बाद उलहाने देते हुए कहती है कि,

याद करो वो दिन कान्हा
जब मेरी गलियों से गुजरा करते थे
वृंदावन की कलियों में छिपकर
हंसी ठिठोली करते थे।

याद करो यमुना का वो तट
जहां वेणूवादन करते थे
उस कंशी वाले के चरणों में
हम निर्भय होकर रहते थे।

इसके बाद आगे और याद दिलाते हुए कहती है कि

क्या याद नहीं है वो भी तुमको
जब चीर चुराया था तुमने
क्या याद नहीं है तुमको वो दिन
जब रास रचाया था तुमने।

अक्षली पंक्ति में विश्व के व्यक्ति के जीवन को खुशी देने वाली बात कहती है कि,

क्या .... था तुमने
है 'प्रेम जगत का सार यहां'

दुनिया बतलाया था तुमने।

आगे और उलहाने देते हुए कहती है कि,

बोलो ऐसे क्यों भूल गए

प्रियतम गोकुल की राहों को

बोलो ऐसे क्यों छोड़ दिया

उम्मीदों के पतवारों को।

आगे श्रीकृष्ण से प्रश्न पूछती है कि,

क्या ? गलती थी हम सबकी मोह

क्या कभी प्रेम में आयी थी

या दुनिया की नज़रों में हम भीं

प्रेम में धोखा खायी थीं।

इतना सुनने के बाद श्रीकृष्ण उत्तर देते हैं कि,

तब कृष्ण तुरत ही बोल उठे

हे ! प्रिये ना ऐसी बात कहो

में भूल नहीं सकता गोकुल

मेरा तुम विश्वास करो

तुम सबका ऋणी रहूंगा मैं

ऐसी बात को ध्यान धरो

रहता हूं मथुरा में

प्राण है गोकुल जाय बस्यो।

और आगे भगवान श्रीकृष्ण उस गोपी को समझाते हुए प्रेम की अमरता को बताते हैं कि,

है प्रेम में प्रेम की वो ताकत

जो कभी नहीं डिग सकता हैप

मौन भले हो जाए इक पल

ये कभी नहीं मर सकता है।

आगे भगवान श्री कृष्ण प्रेम की महानता को गोपी से बताते हैं कि,

मीरा का वो प्रेम ही था जिससे

विशप्याला अमृत में बदल गया

राणा का वो प्रेम ही था
शत्रु भी जिससे दहल गया
वो प्रेम ही था तुलसी जी का
जो कविताओं में उतर गया
वो प्रेम ही था मां जनकलली का जिसने
सेतु सिंधु पर बना दिया
वो प्रेम ही था राधे श्याम का
जिसने मोहन को रुला दिया।

प्रद्युम्न उपाधयाय 'पार्थ'

प्राणपति तुम्हें आना होगा

मौन , मोक्ष , मर्यादा की महिमा को समझाना होगा
प्राणपति तुम्हे आना होगा

जो चोरी छुपे गए है घर से, वो परमेश्वर मेरे है
किसलिए लगाऊं काजल सखियों, इन आँखों मे काले घेरे है
श्रृंगार का महत्व बताना होगा
प्राणपति तुम्हे आना होगा

नाथ ! नही हो साथ मेरे , बस तुम्हारी यादें हैं
अब आंखों में आसूं नहीं ,आँसुओ में आँखे है
सारे सुखों को लाना होगा
प्राणपति तुम्हें आना होगा

दीवाली सा दिन बना
खुशियों के बादल छा गए
सबको यह समाचार मिला
भगवान महल में आ गए
आँगन में दीपक जलाना होगा
प्राणपति तुम्हें आना होगा

उसी कमरे में बैठी है
जहाँ सारा शोक रखा
गए है उनसे मिलने सब
पर माँ ने खुद को रोक रखा
दरश यही पर देना होगा
प्राणपति तुम्हे आना होगा

मुझसे किये गए वो वादे
एक पल में ही तोड़ गए
सो रहे थे सुख से हम
नींद में हमको छोड़ गए
मौन तो बस बहाना होगा
प्राणपति तुम्हे आना होगा

मेरी नहीं ये केवल
वेदों की भी वाणी है
नारी निंदा योग्य नहीं
वह तो परम कल्याणी है
उत्तर को मेरे जानना होगा
प्राणपति तुम्हे आना होगा

इसमे है मेरी भी हामी
राहुल को ही रख लो स्वामी
साथ रहेगा और कहेगा
बुद्धम शरणं गच्छामि
संसार को सारे जगाना होगा
प्राणपति तुम्हे आना होगा

- दीपक जैन

नारी शक्ति

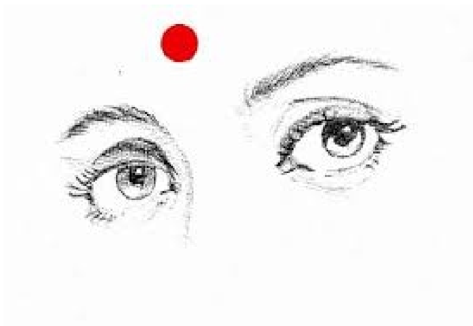

नारी तुम शसक्त रहो,
नारी तुम महान।
नारी से ही नर है,
नवजीवन में है प्राण।

नारी के रूप अनेक,
सरस्वती में बसता ज्ञान,
काली ने दी शक्ति,
दुर्गा से उत्थान।

नारी तेरी भुजाएं चार,
घर की बाग डोर सहेजे,
रणभूमि में करे प्रहार।

अग्रगामिनी नारी तू, हर रंग हर रूप में समाहित तू।
नारी तेरे आत्मबल से समुच्च विश्व की जगधात्री तू।

निर्भय तू, निर्भया तू
शक्ति तू, शक्ति समन्विता तू।
जब जब, अस्मिता पर तेरी उठे सवाल
आगे बढ़कर तूने हरदम ,शत्रुओं को दी ललकार,
सतत विजय हुआ तेरा
चूर हुए अभिमनियो के अहंकार।

क्या वो कह गए पुरुष प्रधान,
निम्नश्रेणी नारी है,

कंधे से कंधा मिला, आज खडी
नवयुग की वो चिंगारी है।

देखो इस जगत की नारी वो, नहीं रही बेचारी है।
तोडी रूढ़ियों की बेडी जब भाग खडे अत्याचारी हैं।

नारी में है बल, नारी में है रूप..
नारी वो जो साहस से झेले जीवन की छाव धूप।

नारी तुम बढती चलो, पाओं हर मुकाम
ना रुके बढते कदम कभी, ऊंचा हो हर अभिकाम।
नारी हो अभिलाषी, नारी हो पर्याप्त।
नारी अपने अस्तित्व पर सदा रखो अभिमान।

नारी तुम शसक्त रहो,
नारी तुम महान।
नारी से ही नर है,
नवजीवन में है प्राण।

- **आद्या शर्मा**

पिता

जो जला समान सूर्य के
सहा धरा समान है
खंड है प्रचंड है अभिन्न देव अंग है
गंग है वो चन्द्र है अग्नि सा ज्वलंत है
हवाओं सा जो मस्त है वो प्रकांड विद्वान है
उपनिषद पुराण है शास्त्र की किताब है
डरा नहीं झुका नहीं
जो उठ गया गिरा नहीं
अटकलें हजार थी जो चल पडा रुका नहीं
हौसलों में खोज है वो खुद की एक खोज है
जिंदगी का सार है
महान है जो बाप है !!

- नितिन त्रिपाठी

गाँव की मिट्टी

गाँव की मिट्टी याद दिलाती, क्या खोया क्या पाया हमने..
तल से नभ तक तब से अब तक, कितना पार लगाया हमने..
जीवन की कड़वी घुट या विलासित जीवन की वो बेलाए..
हार गये या जीत चुके है, जीवन की ये कठिन परीक्षाएं..
गाँव की मिट्टी याद दिलाती, क्या खोया क्या पाया हमने..
तल से नभ तक, तब से अब तक कितना पार लगाया हमने..
स्मरण होती बचपन की वो सुन्दर प्रफफुल्लित बाल क्रियाएं..
या मात, पिता व पूर्वजों की वो अनमोल स्मृति रचनाएं...
गाँव की मिट्टी याद दिलाती, क्या खोया क्या पाया हमने..
तल से नभ तक, तब से अब तक कितना पार लगाया हमने..

- सत्यम कसौधन

चांदनी और तुम

एक तुम्हारे होने से ये बात हो गई, जब रात चांदनी से मुलाकात हो गई,
हमने ये पूछा गहर पे हमारे ना आओगी ?

कुछ देर मुझे देखा, फिर सोचकर बोली, कुछ ठिठकी, सकुचाई, फ़िफ़र जोरकर बोली,

ले जाना है मुझे तो हाथ धर के ले चलो, सारे किवाड़ खोल दो, पसर के ले चलो,
कबसे खडी हूं मैं अगर के ले चलो, कुछ बात अभी है तो ठहर के ले चलो,
मैं खिडकियों के फ़फ़ांक से अंदर ना आऊंगी, बेवक्त ताक झांक से अंदर ना आऊंगी,
जो चल पडी, तो फ़िफ़र मैं ठहरकर ना आऊंगी, पदी से, झारोकों से में लडक़र ना आऊंगी,
नाजुक हूं सीढय़िों से उतरकर ना आऊंगी, पागल हूं कभी इतनी सम्भलकर ना आऊंगी,
गुप चुप से, मैं सिमट के, पुकारे ना आऊंगी, आऊंगी, मगर छत के सहारे ना आऊंगी,
वैसे तो ये सोचा है कि छिप छिप के क्या मिले, पर तुम कहो तो चांद को कहकर ना आऊंगी,
रात भर की मोहलत है मेरी जन्दिगी, सूरज निकल गया तो फ़िफ़र डरकर ना आऊंगी,

एक तुम्हारे होने से ये बात हो गई, जब रात चांदनी से मुलाकात हो गई।
मैं सुन रहा था, इतने में वो फ़फ़ीकी सी हो ली, मुंह फ़फ़ेरकर, रुंधे गले से आगे फिर बोली

पत्तों की शरारत है हम तुमसे ना मिलें, बादल भी चाहता है कि हम तुमसे ना मिलें,
पर खोलकर उडऩा क्या परिंदो को जरूरी ? उनकी भी हिमाकत है हम तुमसे ना मिलें।
कुछ एक बता रखें है हमने तुम्हें हालात, हार शय को नापसंद है, हम तुमसे जा मिलें,
वैसे तो कई मोड है ऊपर से जमीं तक, अपनी ये अदावत है कि हम तुमसे जा मिलें,
मिलने की कोशिशों में झडप़ और बढेग़ी, जो एक हुए हम तो तडप़ और बढेग़ी,
तुम ये ना समझना मेरी कोई गरज नहीं, सुनता यहां पर कोई मेरी अरज नहीं,
हम खुद भी चाहते है कि अब तुमसे सा मिलें, दिल की ये बगावत है कि हम तुमसे आ मिलें,

एक तुम्हारे होने से ये बात हो गई, जब रात चांदनी से मुलाकात हो गई।
कुछ देर फिक्र वो चुप रही, मैं भी नहीं बोला, कहने लगी सच एक तुम्हें और बताऊंगी

आऊंगी, मगर घर पे तुम्हारे ना आऊंगी,
दिखता है वो आंगन में तुम्हारे कोई चेहरा,
कहने लगी लबों पे यही तिश्नगी लिए,
जब तक वो रहे घर पे तुम्हारे ना आऊंगी।

हम सोच रहे थे कि अब हम उससे क्या कहें, तुमसे है उसे बैर, तब हम उससे क्या कहें,
इतने में तुम्हारी तरफ मेरी नजर गई, सूरज लगा निकालने, और भोर हो गई,
मुस्कुराकर खोने लगी फिक्र वो चांदनी, जाए हुये कहा, तुम्हारे पास है अपनी

एक तुम्हारे होने से ये बात हो गई, जब रात चांदनी से मुलाकात हो गई।

- प्रेम कुमार

सैनिक का आखिरी खत

मैं भारत का एक सिपाही हुँ,
दुश्मनो के लिए मै त्राहि हुँ ,
मगर चले कभी मेरी अंतीम सांस,
टूट जाये जीने की आस ,
लपेट तिरंगे में मुझको
पहुँचा देना मेरे मां के पास ...

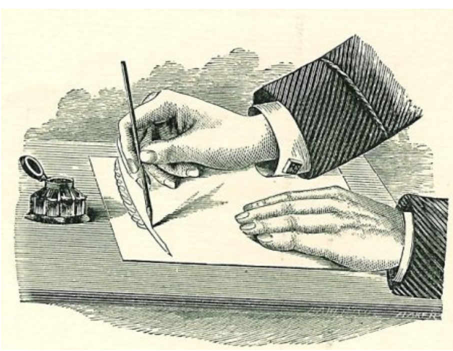

मां अल्फ़ाज मेरे मौन हो गये ,
पर संजोने वाली बात साथ लाया हुं ,
बहु ना लाया डोली में ,
पर देख पुरी बारात साथ लाया हुं।।

बेटा है उनका सेना में
इस बात पर रौब जमाते थे,
आज उनकी आँखों में आंसु
जो हर वक्त सिर्फ़ मुस्काते थे,
बाबू जी मैं मरा नही
मैंने शहादत पाई है
जा कहना सबसे गाँव में
मैंने सीने पे गोली खाई है ।।

जा कहना छोटे भाई से
वादा मेरा निभायेगा
सिर्फ़ एक सीना लुप्त हुआ
दूजा बदला ले आयेगा ।।

वही होगी मेरी छोटी बहना ,
जा उस से तुम प्यार से कहना,
तोहफ़ा उसका याद था पर
कुछ यू इत्तेफ़ाक हो गया ,
मां की सेवा करने में भाई
राखी के पहले राख हो गया ।।

थोडा रुक जाना उस दरवाजे पर,
कहना स्वागत करे ढोल बाजे से,
संग जिंदगी बिताने का
हमने इरादा किया था,
साथ जीने मरने का
सच्चा वादा किया था,
दिल अभी भी जूडे हुए हैं
जिस्मो का खेल छुट गया,
मां का वादा निभाने में
प्यार का वादा टूट गया ।।

अब मै इन भटकती राहो का
अंजान एक राही हुँ,
पर गर्व से कहता हुँ यारो
भारत का एक सिपाही हुँ ।।

- प्रियांशु त्रिपाठी

पतंग और धागा

कि आज़ादी तो आसमान में ही,
सुना है हुकूमत ने यहाँ निचे नज़रबन्दी लगा दी है,
अब तुम्हारे हां कहने का इंतजार मै न कर रहा था, उन्होंने थोडी जल्दी लगा दी है..
खैर, तुम तो पतंग हो ना, और उड़ना भी आता है
में धागा बन जाता हूँ, मुझे बस तुमसे जुड़ना आता है।

कि होगी यहाँ निचे परेशानी लोगों को,
ऊपर सब शांत है, सुबह शाम चिड़ियों की आवाज़े सुनता हूँ
साथ तुम्हारे भी उड़ने के एक ख़्याल मन में बुनता हूँ।
ख़ैर, तुम तो पतंग होना, मेरी ख्यालातों को तो समझती हो,
सब कुछ कहने की क्या ज़रूरत, अनकहीं बातो को भी समझती हो।

कि एक दूसरे से दूरी यहाँ बनानी है लोगों को, हम क्यो ऐसे दूर रहें,
क्या बला है, यही लोग समझे, हम हुकूमत से क्यो मज़बूर रहें ??
तो आओ, एक बार फ़िफ़र साथ आसमान में खो है,
जो लोगों को न दिखे यहाँ से, उतनी दूर खो जाते हैं।

और पकड़ा हू तुम्हें मैं हमेशा, तो डरने की कैसी बात है!
और नज़रबंदी में तो हम है नहीं, तो मरने की कैसी बात है ??

- हिमांशु रंजन

फुटपाथ पर भविष्य

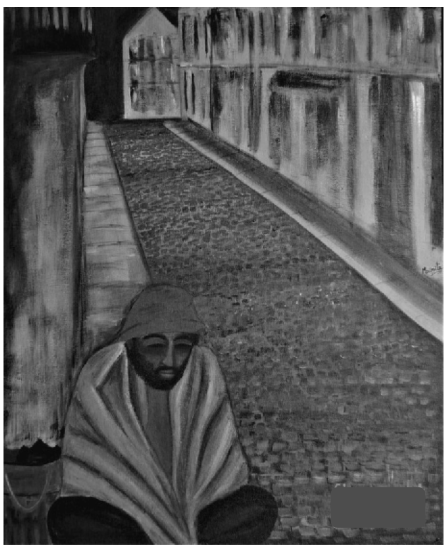

रूह मेरा काँप सा गया था।
जब देखा हालात उस मासूम बच्चे का,
भूख से तिलमिलाया हुआ,
ठिकाना उसका फ़ुटपाथ था।

वंचित था वो दो वक्त की रोटी से,
घिरा हुआ था वो,
दुनियां की तमाम चुनोती से।

शिक्षा से वो बहुत दूर था।
प्लास्टिक चुनने पर मजबूर,
ना कोई उसे पढ़ाने वाला था।
जीवन का ना कुछ उद्देश्य उसका
ना कोई उसे बताने वाला था।

क्या उसका भी कभी भविष्य सुधरेगा?
या बुढ़ापा भी उसका फ़ुटपाथ पर ही गुज़रेगा?
या कुछ होगा चमत्कार,
क्या उसके लिए सोचेगी सरकार?

नितेश झा निक्की

ये सच है कि हासिल किया

ये सच है कि हासिल किया इल्म, इंसान हूँ मैं
निक्षाहें पढ़ी जा सकें इतना आसान हूँ मैं

सभी पूछते हैं ऐसे ख़ैरियत तो हर घड़ी, पर
कहाँ कह सकता हूं कि कैसा परेशान हूँ मैं

गुमाँ में कहा आज से ग़ैर की जान हूँ मैं
ये जबसे सुना यार, मानो कि बेजान हूँ मैं

भला अब क्या फ़ायदा रुकने को कहूँ भी
न जज़्बात निकले, न अल्फ़ाज़, वीरान हूँ मैं

ये हैरान हूँ मैं कि ख़ामोश होकर के बिछड़ा
न इल्ज़ाम, ना दुश्मनी, कैसा नादान हूँ मैं!

मुआफ़ी तुझे दे रहा हूँ मोहब्बत के ख़ातिर
बदल तू गया हो मगर, यार फैज़ान हूँ मैं!

- फ़ैज़ानुल हसन

इस कदर न हमें

इस कदर न हमें सजा दीजिए,
नजऱें हम पर से हटा लीजिए।
जुल्फ्फ़ रुख से ना हटा लीजिए,
है बुझी चिंगारी न हवा दीजिए।
कुसूर सारा आपकी नजर का है
लडख़डाएं ना शराबी कहा कीजिए।
राज दिन ओ रात का हम बतलाएं
आप नजऱें उठा कर गिरा दीजिए।
छुआ कल अब तक हाथ कांप रहे,
आप कह रहे है गले लगा लीजिए।
किसी रोज़ आप चूम कर माथा,
दरारें मुकद्दर में है मिटा दीजिए।
आपको ना आपकी नजऱ लगे,
सामने अयीना मत रखा कीजिए।
फ्फ़िर से एक दफ्फ़ा अंधेरा छा गया,
आप रुख पर से पर्दा हटा लीजिए।
तितलियां छेड़ेगर फ्फ़िर ना कहना,
बाग में ना अकेले चला कीजिए।
क्या गुनाह करे जो ये सजा मिले,
अपनी बाहों का कैदी बना लीजिए।
आप हंसे दे तो जैसे घुंघरू बजे,
आप ऐसे ही हंसते रहा कीजिए।
आप आयी है आज हमसे मिलने,
बहुत हुआ हमको जगा दीजिए।

- विश्व प्रताप सिंह

नारी शक्ति

इस गांव में पॉलिटिक्स यानी राजनीति का खेल बहुत पुराना ही चुका था और इस बुरे खेल की मंझी हुई खिलाड़ी रानी सिंह थी। इनके नाम के पीछे भले ही सिंह लगा है, लर गांव में पीठ पीछे इनको ससम्मान रंडी रानी कहकर ही बुलाया जाता है। ख़ैर इस गांव में मोहब्बत में पॉलिटिक्स का चैप्टर जल्दी ही खुला था और इसका शुभारम्भ कराने वाली मोहतरमा गांव की सबसे कंटाप माल हैं, हरामी लौंडों के लिए। उनके लिपिस्टिक का रंग, दुपट्टा ओढ़ने का ढंग, सैंडल, मेहंदी, काजल, साबुन, शैम्पू के ब्रांड की ख़्बर गांव के लगभग हर जवान लौंडे को होती है। कुछ महाशय तो ये पता लगाने में लगे थे कि वो कपड़े कौनसे ब्रांड का पहनती हैं, कपड़े यानी केल्विन कलेंन के या पेरिस ब्यूटी के।

गांव के लगभग हर लौंडे के साथ ये गन्ने या अरहर के खेत मे जा चुकी थी लेकिन सिफ्फ़ ख़्वाबों में, ये ख़ूबसूरत अप्सरा, नाचीज़ गुलाब भी थी लेकिन सिफ्फ़ शरीफ्फ़ लौंडों के ख्याल और उनकी शायरियों में , जिनकी अवकात बस लिखने भर की थी, बात करने की दूर वो तो प्रीतो से नज़र मिलने में भी शर्मा जाते थे। प्रीतो गांव का प्यार था, बाकी सर्टिफ्फ़िकेट में ये प्रीती मिश्रा थी उम्र वही १९-२० वाली , इंसान जब जवानी की दहलीज पर कदम रखता है। वैसे तो प्रीतो को गांव का एक भी लड़का पसंद नही आता था और न ही वो किसी को भाव देती थी बाकी एक बार मुस्कुराकर तो वह किसी से भी अपना काम निकलवा लेती, पूरे गाँव की माधुरी दीक्षित जो थी। इस गांव के खेल में पिछले हफ्ते दो नए खिलाड़ी आये जिनमे से एक ने प्रीतो के आशिक़ों की संख्या बढ़ दी और वो था रानी सिंह का इकलौता लड़का ठाकुर सनी, दिखने में गोरा चिट्टा, टिप टॉप हैडफ़्फ़ोन लगाकर जय राम बोलने वाले गांव में गुड मॉर्निंग, हाय अंकल की माला जपने वाला सनी।

दरअसल, सनी पिछले कई सालों से दिल्ली में रहता था और काफ्फ़ी वक्त बाद गांव लौटने की वजह से दिल्ली का रंग इनपर बख़ूबी चढ़ा था। उम्र इनकी भी उतनी ही थी कि प्रीतो को देखते ही दिल दे बैठे, वैसे दिल देना तो कहने के लिए थे बाकी खयाल में तो गन्ना, अरहर ही चल रहा था, तो अपने इस मोहब्बत के सिलसिले को आगे बढ़ाने के लिए उसने कई बार प्रीतो से बात करने की कोशिश करी पर प्रीतो थी कि थोड़ा बहुत बात करने के बाद भाव ही नही देती थी।

एक दिन मौका और दस्तूर देखकर सनी ने पूछ ही लिया कि 'शादी करोगी हमसे?' साथ सोने का मन है तो शादी कर लोगे! प्रीतो ने तपाक से बोला, सनी भले ही ६-७ साल दिल्ली में रहकर आया था पर किसी गांव की लड़की से ऐसा सुनकर सकपका गया फ़िर भी उसने हार नही मानी और पूछा कि 'क्या और कोई रास्ता है?' वो उधर वाला जिधर से आये हो निकल लो बहुत जल्दी प्रीतो ने धमकाया पर सनी के अंदर तो आग लगी थी, भरी दोपहरी में गांव की बगिया में कौन आता होगा बस इतना खयाल आते ही वो टूट पड़ा प्रीतो के ऊपर लेकिन वो तो प्रीतो थी न गांव का प्यार, कभी भी कहीं भी अकेली जाती तो उसके पीछे दो पाटी चलती थी, एक कपड़ो की तहकीकात करने वाली और दूसरी शायरी लिखने वालों की और एक भले शायर आशिक़ ने देख लिया तो लगा चिल्लाने और शोर मचाने। प्रीतो अगर इतनी बुरी स्थिति में न होती तो शायद उसके दिमाग मे ये ख़्याल ज़रूर आता कि ये मेरे सामने बोल भी सकता है।

गांव के कई लोग इकट्ठा हो गए। रानी सिंह के कुछ चमचे सनी को लेकर घर गए और प्रीतो के पापा उसको लेकर फ़ौरन पुलिस स्टेशन भागे क्योंकि उन्हें पता था कि अगर रानी सिंह उसके घर पहुंच गयी तो मामला को सिर्फ़ रफ़ा दफ़ा करना पड़ेगा। इस खेल के दूसरी खिलाड़ी है इंस्पेक्टर शोहराब जो उस चेन से बंधे हुए हाथी की तरह हैं जिसे अपनी ताकत का बिल्कुल भी इल्म नही। इंस्पेक्टर शोहराब अच्छे खेल के कमज़ोर खिलाड़ी थे। सर रिपोर्ट लिखिए, रानी सिंह के हरामी लड़के ने मेरी बेटी के साथ छेड़ छाड़ की है लिखिए और पकड़ के अंदर करिये मादरचोद को। शोहराब का इस गांव में पहला केस था और उसकी आत्मा तुरन्त पुकारने लगी कि इस लड़की को इंसाफ़ मैं दिलाऊंगा। नाम बताइये अपना उसने प्रीतो से पूछा, पांडे, इनका स्टेटमेंट लो। आपका नाम? 'सूबेदार मिश्रा' प्रीतो के पाप ने जवाब दिया । इंस्पेक्टर जिस अंदाज़ में काम कर रहा था, सूबेदार को लग गया कि अब इस रानी सिंह को कोई नही बचा सकता। चलो धर कर लाते हैं साले को , बहुत गमी है खून में। आओ मिश्रा जी, इतना कहते हुए वो थाने से बाहर निकला ही था कि सामने से रानी सिंह अपने बेटे के साथ खुद आते हुए दिखी। रानी सिंह भी अपने खेल की उस्ताद थी उसे जैसे ही उसे पता चला कि सूबेदार बिना उसके घर आये थाने चला गया तो वो सनी लेकर खुद स्टेशन पहुंच गई।

अरेस्ट वारंट है इंस्पेक्टर साहब? शोहराब को कुछ समझ नही आता और वो अपना हाथ आगे बढ़ा देता है जिसमें सनी के नाम का अरेस्ट वारंट होता है। हाँ तो ले जाइए,बंद करिये इसको, रानी सिंह सनी को इंस्पेक्टर की तरफ़ ढकेलते हुए बोलती है। सनी को ले जाने के लिए

शोहराब पांडे को इशारा करता है। रानी सिंह सूबेदार को देखकर मुस्कुराते हुए थाने में घुसती है और इंस्पेक्टर को आफ़िस में बुलाती है , शोहराब सकपकाया से अंदर जाता है ।

टेबल के एक तरफ़ शोहराब बैठा है जिसके चेहरे की हवाइयाँ उड़ी हैं कि इस औरत में दिमाग के चल क्या रहा है और दूसरी तरफ़ रानी सिंह ऐसे चौड़ कर बैठी है जैसे उसे अपना हर अगला कदम पता हो और सारे फ़ैसले उसके मन मुताबिक होंगे।

कितने पैसे लोगे ? रानी सिंह इस लहजे से पूछती है जैसे उसे पता है कि शोहराब मना कर देगा लेकिन बस वो शोहराब से सुनना चाहती हो। शोहराब थोड़ा फ़िल्मी अंदाज़ में जवाब देता है कि ये वर्दी बिकाऊ नही है, आपके लड़के ने ग़लत किया है।

क्या ग़लत किया है ? प्यार करता है पसंद है उसको और कहां की राजकुमारी है वो ? ? बताइये इंस्पेक्टर साहब ? अब आप इस गांव में गलत सही बतायेंगे ?

होश हवास में बात करिये रानी सिंह जी यहाँ समय बर्बाद करने के बजाय जाकर वकील का इंतज़ाम करिये। शोहराब ने मुस्कुराकर कहा।

नारी शक्ति जानते हो ?

क्या ?

रानी जितनी ही शांति और मुस्कुराकर ये सवाल पूछती है शोहराब उतने ही आश्चर्य से क्या बोलता है।

हाँ, जानता हूँ, जिसके दम पर ये प्रीति बिना किसी डर के लड़ेगी और इंसाफ़ पाएगी।

रानी सिंह कुछ नही बोलती है और मुस्कुराते हुए अपना ब्लाऊज खोल देती है ऐसा लगता है कि जैसे वो अपने सवाल का जवाब दे रही हो। वो इंस्पेक्टर से एकदम आराम से बोलती है जैसे

उसे पता हो कि इंस्पेक्टर वही लड़ेगा जो वो बोलेगी। अपने हवलदार से कहो सनी को बाहर करे, ये ऋखठफफ्राड़ो और केस बन्द करो नही तो अगले १० मिनट के अंदर एक महिला के साथ थाने में ज़बरदस्ती करने के आरोप में पूरे गांव से लतियाये जाओगे और नौकरी से तो हाथ धो ही लोगे। शोहराब धर्म संकट में था वो अपनी जान बचाए या प्रीतो को इंसाफ्फ़ दिलाये उसके सामने एक औरत कपड़ो आधी नंगी और इज़्ज़त से पूरी नंगी बैठी थी। वो बेबस और मजबूर होकर हवलदार से सनी को छोड़ने के लिए कहता है। रानी इंस्पेक्टर का हाथ उठाकर अपने छाती पर रख देती है , शोहराब सहम जाता है और बोलती है कभी घर आइये हमे भी खातिरदारी का मौका दीजिये इतना कहते हुए वो ब्लाउज का बटन बन्द करती है और दरवाज़े से निकलते हुए बोलती है, अगले महीने शादी है इन दोनों की, कार्ड भिजवा देंगे मुहूर्त निकलते ही, आइयेगा ज़रूर सादर आमंत्रित है आप!

- उत्कर्ष गुप्ता

लॉकडाउन डायरी

लॉकडाउन २.० का तीसरा दिन था ।

अभी अभी मुंबई के मजदूरों की दशा पर चर्चा से (जिसे आसान भाषा में बहस भी कहा जा सकता है) उठा ही था सावन कि विपक्षी टीम के कप्तान यानी सावन के पिताजी , श्री जगदीश जी ने फिर आवाज लगाया ।
' सावन , ओ सावन , अरे कहाँ गया ? '
ना चाहते हुए भी सावन को जवाब देना ही पडा ।
' हाँ पापा , बताइये '
' छुट्टियाँ आराम करने के लिए नही हैं , कभी कुछ पढ भी लिया करो , या युवराज जी से निवेदन करना पडेगा ' , सावन के पापा ने मानो सावन के आत्मसम्मान पर शब्दों के तीर चला दिये थे । संस्कारवान बालक सावन , जो पहले ही ३ सालों बाद पहली बार एकबार में ४३ दिन घर पर बिता चुका था , और अभी भी आगे का कोई भरोसा नहीं था कि ये मुआ कोरोना कब तक रहेगा , और कब तक सावन को घर में रहना होगा ।

सावन का परिचय बस इतना है कि उमर है २२ की , समझ है २७-२८ की और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में स्नातक के तीसरे साल में है । इसके अलावा कोई परिचय नहीं है सावन का । जगदीश बाबू भी जब कभी किसी से सावन का परिचय करवाते हैं तो वो भी तो बस इतना ही बताते हैं ।

संभव है कि परलोक में चित्रगुप्त महोदय के यहाँ भी सावन के लेखा जोखा डायरी में भी बस इतना ही परिचय दिया हो ।

एक और परिचय है सावन का , रूम नं० ६१ वाला पंडित । ये रूम नं० ६१ पडता है सावन के हॉस्टल यानी ए.एन.झा में । एक जमाने में इस हॉस्टल में सीट पाने का मतलब आधा यूपीएससी पार समझा जाता था ।

पूरब के ऑक्सफ़र्ड की एक अनाधिकारिक मगर जमाने से जागृत विशेषताओं मे आता है यह हॉस्टल ।
मगर यह कहानी हॉस्टल की नहीं है , ना ही है इलाहाबाद विश्वविद्यालय की , यह कहानी तो है सावन के क्वारैनटाइन की ।

पिताजी के आदेश का पालन हुआ और सावन बाबू अपने अस्त्र शस्त्र तैयार करने लगे ।
आँखों पर चश्मा उनके आँखों की शोभा बढा रहा था , बाएं हाथ में नई नवेली लक्ष्मीकांत बिल्कुल इस तरह थी , जैसे वित्त मंत्री के हाथों में बही खाता , दाएं हाथ में महोदय अपने सिंहासन को संभाले हुए थे जो एक दो बार ही इस्तेमाल की गई होगी इस तरह ।
अब आवश्यकता थी रणक्षेत्र की , तो तय यह हुआ कि आज की क्लास ऊपर छत पर लगाई जाएगी ।

४-५ सीढी चढते ही सावन को आभास हुआ कि तारतम्य कुछ बिगडा हुआ सा है , सो अंतःप्रेरणा की आवाज पर कुरसी को उलटा कर अपने सिर पर रख लिया और लक्ष्मीकांत को सिर के ऊपर रखी हुई उलटी कुसी के उपर का आसन मिला ।
शाम के ५ बज रहे थे , दोपहर में गरमी के बाद अभी मौसम कुछ ठीक सा था । जगदीश बाबू के आदेश और अंतःप्रेरणा से निकली आवाज के बाद सावन ने रैंडम तरीके से किताब के पन्ने पलटना शुरू किया ।

नजर के सामने से संवैधानिक सभा यूँ गुजरा मानो सभा के सभी सदस्य सावन मन के भीतरी ऊफ्फान का जिम्मेदार स्वयं को मानकर माफ्फी माँग आगे बढ गए हों । फ्फिर एक एक अध्याय आते गए , पन्ने अपने आप पलटते गए । ना तो सावन ही सहज हो पा रहा था पढने को , और शायद किताब भी आज कोई मौलिक अधिकार और कर्तव्य नहीं थोपना चाहते थे सावन पर ।

कि तभी पलटते हुए पन्ने अचानक से रुक गए , ऐसा सामान्यतः तब होता है जब किसी पृष्ठ की कोन को मोड़कर रखा गया हो । मगर सावन ने तो लक्ष्मीकांत को खरीदने के बाद कभी पढा ही नहीं , मगर खरीदने के अगले ही दिन नई किताब देखकर उत्साहित हुई वर्षा को जरूर दिया था सिफ्फ देखने के लिए । हालाकि सावन जानता था कि देखकर वापस लौटाई जाने वाली किताब

पर भी गहन अध्ययन किया जा चुका होता है ।

‘ अच्छा , तो मैडम आटीकल नं० ३२३ तक पढ.ले गई ६ ही दिन में ‘ सावन मानो स्वयं को ही तर्क देकर संतुष्ट करना चाह रहा हो ।

सावन को क्या पढ़ना था ये मालूम था उसे । एक ओर लॉकडाउन में जहाँ देश के सभी चुनाव कैंसिल हो रहे थे , सावन चुनाव पढ.रहा था ।

इस प्रकार की जद्दोजहत १०-१२ मिनट से ज्यादा तो चलती नहीं , सो सावन भी थक हार कर खुली किताब में किसी चुनाव के दाँवपेंच समझने लगा था शायद ।
मगर खुली किताब पर जब आप अपलक हो जाएं तो निश्चित ही आप अतीत में होते हैं , अरे वहीं , नए जमाने का नॉस्टैल्जिया ।

४ , मार्च २०२० :
हॉस्टल के सभी छात्र एक एक कर घर जाने को उद्दत थे । सावन ने भी ७ मार्च की टिकट करा ली थी , वेटिंग मिला था मगर सावन को भरोसा था कि ५ वेटिंग तो खुल ही जाएगा । हॉस्टल से घर जाने की सबसे अच्छी बात यही होती है कि पैकिंग में समय नहीं लगता । बिस्किट पानी खरीदने को छोड.दें तो कुल साढे.५ मिनट लगते थे सावन को ।
सावन के फ़्फ़ोन की घंटी बजी , फ़्फ़ोन तकिये के नीचे था तो आवाज.ज़रा धीमे आ रही थी सो उठाने में जरा देर हो गई ।

हाँ , हैलो !
उधर से आवाज वर्षा की रूम पार्टनर खुशबू की थी ।
‘ सावन, मैं खुशबू बोल रही हूँ , वर्षा की रूममेट , वर्षा से तुम्हारा नम्बर मिला , तुमसे कुछ बात करनी थी ..... बात दरअस ... ‘
खुशबू को इतने रफ्तार में सावन ने कभी नहीं देखा सुना था ।
‘ अरे रुको तो पहले , बात बताओ तो , सब ठीक तो है ना , खुशबू तो घर गयी है ना ‘ सावन ने कहा ।
‘ हाँ , वो तुम्हारी किताब लौटाकर लौटी थी जब २८ तारीख को , उसके अगले दिन ही चली गई

‘ , इस बार खुशबू की आवाज सामान्य थी ।

‘ ये तो पता है मुझे , वो बता कर गयी थी , १४ को आने को बोलकर गयी है ‘ सावन ने अपनी जानकारी खुशबू से साझा की ।

अब बारी खुशबू की थी बोलने की ,

‘ तो क्या तुम्हें सच में कुछ नहीं पता है ? ‘

इस बात से सावन उठ बैठा मानो कोई अनहोनी खबर सुनने को तैयार हो रहा था ।

सावन अभी भी शांत सा पहले सब कुछ जान लेने की चाह में था ।

‘ असल में वर्षा अब नहीं आएगी लौटकर सावन , शायद इस साल की परीक्षा भी ना दे सके वो ‘ खुशबू ने धीरे से सम्भल कर कहा ।

सावन को किसी अनचाही बात का आभास तो था , मगर ये वो बात थी कि काटो तो खून नहीं के स्थिति में जा चुका था । मोबाइल पर हाथों की पकड़ मजबूत होने के अलावा पूरा शरीर शिथिल हो रहा था ।

‘ पर वर्षा तो ऐसा कुछ बताकर नहीं गयी , वो मुझे तो सब कुछ बताती है ‘ सावनने लडख़डाती आवाज़ में कहा ।

‘ सुनो सावन , वर्षा अपने पापा , मम्मी के साथ मुंबई गई है ।

कोई बडा अस्पताल है वहाँ ‘ खुशबू अब भी अपने आप को साफ्फ़ साफ्फ़ बताने में सहज नही पा रही थी ।

सावन : पर अस्पताल क्यूँ , अरे एक तो तुम पहले साफ्फ़ साफ्फ़ बताओ कि किसे और क्या हुआ है ।

खुशबू : वर्षा को हुआ है , ब्रेन ट्यूमर , लास्ट स्टे...

खुशबू अपनी बात पूरी कह भी ना पाई की सावन ने फ्फ़ोन रख दिया था । वो नहीं सुनना चाहता था शायद । असल में सुनकर भी वो स्वीकार नहीं कर सकता था , सो उससे सुना भी नहीं गया ।

अब कई दफ्फ़ा सावन ने वर्षा को फ्फ़ोन करना चाहा , लेकिन नम्बर बंद आ रहा था ।

सावन को कुछ सूझ तो रहा नहीं था , सो दरवाजे पर सिटकिनी लगाकर बैठ गया कुरसी पर ।

सावन रोना नहीं चाहता था , मगर आसूँ की धार अपना रास्ता जान चुकी थी । कमरे में सन्नाटा इस कदर पसरा हुआ था मानो कोई रहता ही नहीं हो उस रूम नं० ६१ में ।

पूरी रात सावन बैठा रहा उसी कुसी पर , चुपचाप , सुन्न सा । अगले दिन सुबह ७ बजे की ट्रेन से

सावन रवाना हो चुका था घर की ओर। उसे तो सुध ही नही हो रहा था किसी चीज का , तो कौन सा टिकट और कौन सा वेटिंग। दोपहर १२ बजे सावन अपने घर के दरवाजे पर इस उम्मीद में खडा था कि १३ को इलाहाबाद जाकर १४ को इंतजार करना है वर्षा का।

....

वर्षा की लौटाई गयी अपनी ही किताब पर नजरें अब भी खुली हुई थीं। ना जाने क्या सूझा अचानक कि वही चुनाव वाला चैप्टर ही सावन फ़िर से पढने लगा , एक एक लाइन , एक एक शब्द , मानो महसूस करना जाहता हो उन शब्दों को जिन्हे शायद वर्षा ने पढा हो आखिरी में। इन सबका आधार बस वही मुडा हुआ पेज का कोन था। ७-८ पेज के अध्याय को लगभग ४० मिनट में सावन अक्षरशः पढ़ लिया था कि तभी अध्याय के अंतिम पेज पर पेंसिल से ही कुछ लिखा हुआ मिला।

चूँकि अभी सावन ने नई किताब तो पढी नहीं थी अबतक तो ये लेखनी उसकी तो हो नहीं सकती। सावन नें चश्मा ठीक किया और बिल्कुल किसी पुरातत्ववेत्ता की तरह देखने लगा। अंग्रेजी के तीन ही अक्षर तो लिखे थे , बी , वाई , और ई। लूश।

महीना भर से ऊपर हो चुका था सावन को घर आए , किताब तो पहली बार ही खुली थी। एक बार फ़िर सावन शिथिल हो रहा था।

कितनी समझदार थी वर्षा , मानो उसे पता हो कि कि ये किताब कब और कहाँ खोली जाएगी , कब मिलेगा सावन को उसका ये संदेश। वो निश्चिंत कर देना चाहती थी खुद को कि जब जा रही होगी वो इस दुनिया से , कम से कम उस वक्त विचलित नहीं रहेगा सावन।

शायद वर्षा जानती थी ये नियति , इसिलिए बिना बताए समेट लिया था उसने खुद को इस घरों में बंद दुनिया से।

वर्षा ने छोड़ दिया था सावन को अकेला , मगर इतना भी ना सोच सकी कि बिना वर्षा के सावन क्या पतझड़ नहीं हो जाएगा।

सावन अब वो सूखा मौसम रह गया था जिसके बादलों में कोई वर्षा नहीं बची , रह गया था तो बस एक लूश लिखा लक्ष्मीकांत, वीरान सा ये लॉकडाउन और सावन का एक नया परिचय , बिना वर्षा वाला सावन।

- अंकित उपाधयाय

बलिदान परमो धर्मा

२ मई की रात १० बजे जब हम सब अपने घरों में रात्रि भोजन समाप्त करके सोने की तैयारी कर रहे थे उस वक़्त कुछ लोग थे जिनका पाकिस्तान या किसी अन्य आतंकवादी संगठन से कोई जातीय मतभेद तो नही था लेकिन देश के सैनिक के रूप में उन्होंने जो हमारी आपकी सुरक्षा की प्रतिज्ञा की थी उस प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए जम्मू कश्मीर के हंदवाड़ा में एक घर मे छिपे आतंकवादियों से लोहा लेने में लगे थे, उनका उदेश्य था कि घर मे बंधी बने हुए प्रत्येक नागरिक की सुरक्षा सुनिश्चित की उन्होंने धर्म देख के यह तय नहीं किया था कि किसकी जान बचाई जाए किसकी नही , वो अंत तक लड़े हमारे लिए, हमारे देश के लिए और जाते जाते हमारे ऊपर ऐसा कर्ज़ छोड़ गए जिसका भुगतान हम सातों जन्म में नही कर सकते हैं ।

यूँ तो कल हमारे पांच वीर जवानों ने शहादत पाई लेक़िन यह कहानी सिफ़र्फ़ उन पाँच जवानों की नही है देश की सुरक्षा में लगा हर एक सैनिक हमारे सम्मान का प्रतीक है ।

देश के सेवा में लगे प्रत्येक जवान का एक निजी जीवन भी है उसका परिवार उसके बच्चे सब कुछ होते हैं लेकिन अपने कर्त्तव्य के बीच मे कभी कुछ नही आने देते वो लोग दूसरी तरफ़फ़ हम और आप अगर घर से किसी सदस्य को यदि थोड़ी सी देर हो जाये तो व्याकुल हो जाते हैं ज़रा सोचिए जिन माँ के बेटे हंदवाड़ा में भारतीय सेना का नेतृत्व कर रहे हैं फ़फ़ोन उठाने तक की हिम्मत कैसे जुताई होगी।।

एक वर्ग विशेष खखढ या अन्य प्रतिष्छित विश्विद्यालय में प्रवेश पाके खुद को बहुत बौद्धिक रूप से विकसित समझने लगता है उनलोग को अपने समुंदर होने का गुमान हो रखा है मेरी गुजारिश है उन लोगों से एक बार ज़रा छऊअ का प्रवेश परीक्षा का प्रारूप देखें उन्हें एहसास हो जाएगा कि हमारे देश के जवान देश की सेवा करने के उद्देश्य से आमी में जाते हैं ऐसा नही है कि वो हमारे आपकी तरह बड़े विश्वविद्यालय नही जा सकते थे लेकिन उनके दिल मे जो देश के प्रति समर्पण है वो हमारे आपसे कहीं ज्यादा है यही बात उन्हें हमसे अलग बनाती है।।

आज जब सरकार कोरोना यौद्धाओं के सम्मान के लिए कोई कदम उठाती है तो एक दल विशेष

को दर्द होता है , और वो यह भूल जाते हैं जितना आप अभिव्यक्ति की आज़ादी चिल्ला रहे हैं वातानुकूलित कमरे में बैठ के उस अभिव्यक्ति की आज़ादी को सुनिश्चित करने के लिए अनगिनत जवान अपनी जान के परवाह किये बिना देश की अखंडता एंव सुरक्षा के लिए सीमा पे तैनात हैं जिस दिन वो नही होंगे हमारी आपकी अभिव्यक्ति की आज़ादी का भी कोई अस्तित्व नहीं बचेगा।

देश के एक आदर्श नागरिक होने का फ़फ़र्ज़ निभाइये , देश के लिये यदि कुछ बलिदान करना पड़े तो उसके लिये तैयार रहिये क्योंकि देश सेवा का दायित्व सिफ़र्फ़ जवानों के कंधों में नही हमारे आपके ऊपर भी है ।।।

नन्ही ही हसी ,भोली सी ख़ुशी
फफ़ूलों सी वो बाहें भूल गए,
जब देश ने दी आवाज़ हमें ,हम घर की राहें भूल गए
हम सोये नही कई रातों से ऐ जान ऐ वतन सौं चाँद बुझे
हमे नींद उसी दिन आएगी जिस दिन देखेंगे आज़ाद तुझे ।।।

बलिदान परमो धर्मा
Never Forget Never Forgive

- अभ्युदय मिश्रा

आलेख

सबके अपने राम

'मैं राम पर लिखूँ मेरी हिम्मत नहीं है कुछ
तुलसी ने वाल्मीकि ने छोडा़ नहीं है कुछ'

शम्सी मीनाई के इस शेर को भली भाँति जानते हुए और समझते हुए भी मैं अपने को रोक नहीं पाता।

रोक भी कैसे सकता हूँ, संयोग ही ऐसा है! वैसे भी 'राम' तो जैसे मेरे जीवन का एक अभिन्न अंग है। जन्म राम नवमी का, नाम भी श्रीराम और 'मानस' से प्रेम!

डीडी नैशनल पर रामायण के पुनः प्रसारण ने मानो उन स्मृतियों को पुनजीवित कर दिया हो! वो स्मृतियाँ जो बचपन से रामायण की हम सब के मन में हैं। मैंने उम्र के साथ-साथ भगवान राम के प्रति अपनी समझ को बदलते और बढते देखा है और यह कहना गलत नहीं होगा कि प्रभु श्रीराम के प्रति मेरा नजरिया भी बदला है। हमने बचपन में जिन्हें ईश्वर कहकर यह मान लिया था कि यह आचरण किसी दैवी शक्ति का ही हो सकता है, आज हम उन्हीं के आचरण के मानवीय मूल्यों को समझने का प्रयास कर रहे हैं और यह आचरण अपने जीवन में उतारा जा सकता है इसके प्रति भी स्वीकृति अब बढती दिखाई दे रही है। यह एक उपलब्धी है। रामायण एक मानव के सत्कर्मों और पराक्रम से उसके भगवान बनने की कहानी है या फ़िर भगवान के मनुष्य बनने की, मनुष्यता को एक उद्देश्य देने की कहानी है इसपर भी विचार किया जाना चाहिए।

अक्सर मन में यह विचार आता है कि प्रभु श्रीराम को किस रूप में देखा जाए और समझा जाए? क्या हमारे राम सिर्फ़ नामराशि हैं? या फ़िर हमने उन्हें इससे ऊपर बढक़र भी देखा है? यह सवाल अपने आप में रोचक है और सभी को इस पर थोडा़ मंथन करना चाहिए।
खैर मेरे अपने राम से आपका परिचय कराता हूँ। अपने से मेरा अर्थ है जो मेरे हैं, मेरी कल्पना में हैं, जो जितने मेरे भीतर हैं उतने ही बाहर हैं वो वाले राम।

मेरे राम वह हैं जो मुझे आज की दुनिया की कई बडी समस्याओं और विवादों का समाधान देते हुए दिखाई देते हैं। मेरे राम वह हैं जो बचपन से निर्मोही हैं, धीर-गंभीर हैं और विनम्र हैं। जो व्यवहार निपुण हैं। राम - परशुराम संवाद में इसकी सबसे अच्छी झलक दिखाई पडती है। लक्ष्मण बालकोचित हठ या क्रोध कर सकते हैं पर राम व्यावहारिकता को समझते हैं। एक बाण में सृष्टिको खत्म करने की क्षमता वाले राम अनुनय विनय करते हैं -

'विप्र वंश की अस प्रभुताई।

अभय होई जो तुमही डराई।।

और परशुरामजी को मनाते हैं। माँ कौशल्या को वनवास की खबर देते हुए उनके मन में जरा भी क्रोध और विषाद दिखाई नहीं देता। वनवास की खबर भी कुछ इस प्रकार देते हैं -

'पिताँ दीन्ह मोहि कानन राजू।

जहँ सब भाँति मोर बड़ काजू।।'

वे ऐसे बताते हैं जैसे उन्हें अयोध्या पर राज करने से भी बडा कार्य पिता दशरथ ने सौंपा है। ऐसा सिर्फ़ राम ही कर सकते हैं।

एक तरफ़ तो वे आदर्शों का भंडार है, तो दूसरी तरफ़ उन आदर्शों की व्यावहार्यता को भी समझते है। ३ दिन तक याचना करने पर भी समुद्र उन्हें जब रास्ता नहीं देता तब तुलसीदासजी कहते हैं -

'बिनय न मानत जलधि जड गए तीनि दिन बीति।

बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति।।'

यानि हमेशा सद्व्यवहार से भी काम नहीं चलता और तब मनुष्य को अपना आचरण बदलना ही पडता है। मेरे अपने राम आपको विषम व्यवहार करते दिखाई देंगे, परिस्थितियों के अनुसार। यही आज के समय की सबसे बडी जरूरत है। मेरे राम मर्यादा स्थापित करते हैं और उस बहुपत्नी वाले समय में एकपत्नी व्रत धारण करते हैं। उनके मित्र निषादराज गुह से उनकी भेंट का प्रसंग यह बताता है कि जाति देखकर मित्रता उस समय भी नहीं की जाती थी। शिक्षा पर भी सभी का बराबर हक था।

मेरे राम संवेदनशील हैं और मार्मिक भी। रामायण का एक अनूठा और अति मार्मिक प्रसंग आपको याद होगा। भरत अपनी सेना, माताओं और प्रजाजनों के साथ चित्रकूट जाते हैं। अपने राजा राम को मनाने। उस प्रसंग की एक और विशेषता है। त्याग की होड। ऐसा अनुपम त्याग जो सिर्फ़ राम का नहीं। मेरे मत में राम अगर मर्यादा पुरुषोत्तम हैं तो उनकी मर्यादा को निष्कलंक रखने का श्रेय उनके भाईयों को भी मिलना चाहिए। एक बचपन का किस्सा बताता हूँ। गणेश महोत्सव में कुछ प्रतियोगिताएं हुआ करती थी। रात में। गणेश पंडाल में। एक प्रतियोगिता थी। १ मिनट में कुछ प्रश्नों के सबसे ज़्यादा उत्तर देने की। प्रश्न था कि मान्यताओं के अनुसार हमारे यहाँ ३३ करोड़ देवी - देवता हैं। आप जितने जानते हैं उनके नाम लिखें। मैंने लिखना शुरू किया। ऐसे परीक्षा वाले समय में आप अक्सर वो भी नहीं कर पाते जिसमें आप खुदको पंडित समझते हो। पास में माता बैठी थी। उन्होंने कहा नाम भी नहीं लिख पा रहे ? राम के साथ लक्ष्मण, भरत, रिपुदमन भी लिखो। नाम ही तो बढ़ाने हैं ! मेरे मन में संकोच सा हुआ। लिख तो दिए पर मन मानने को तैयार नहीं। राम तो भगवान हैं लेकिन बाकी भ्राता भी भगवान कहे जाएँगे ? आज रामकथा को करीब से समझने और महसूस करने के बाद मैं बड़े ग़र्व से कह सकता हूँ कि राम यदि भगवान हैं तो उन्हें भगवान बनाने वाले भी तो भगवान ही हैं ! खैऱ प्रसंग पर आते हैं । चित्रकूट वाले। उस प्रसंग में मेरे राम का सुंदर चरित्र देखने मिलता है। माताओं को देखकर जब वे उनसे भेंट करते हैं तब कायदे से वे सबसे बड़ी माँ यानि अपनी जननी कौशल्या से भेंट करेंगे और चरण वंदना करेंगे। लेकिन मर्यादा और आदर्शों के धनी राम उस समय इसे तोड़ते हैं। पहले कैकई माँ से भेंट करते है। ऐसा इसीलिए क्योंकि वे जानते हैं कि माता कैकई संकोच में दबी हुई हैं। उनका मन दुःख और विषाद से भरा हुआ है। उनका जना भरत भी उन्हें दोषी मानता है। मेरे राम अपने निश्चल प्रेम से उनके विचलित मन को शांत करते हैं। उन्हें ढाँढस बंधाते हैं और उन्हें इस बात का एहसास दिलाते हैं कि वे दोषी नहीं हैं। मेरे राम धर्म और मर्यादा का प्राण देकर पालन करने वाले भी हैं तो दूसरी तरफ़ ज़रूरत पड़ने पर उससे परे भी हैं। अंत मे मेरे राम का एक करुण रूप भी देखने को मिलता है।

गोस्वामी तुलसीदास जी की रामचरितमानस में राम आपको हमेशा कठोर, निमोही, धीर - वीर दिखाई देंगे और उनके मुखमंडल पर हमेशा स्मित ही मिलेगा। इसी तरह के राम हमें धारावाहिकों में भी दिखेंगे। जैसे किसी तरह का चोला ओढ़े बैठे हों। मगर सीता हरण के पश्चात उनकी खोज करते समय आपको इसका विपरीत भी दिखाई देगा। करुण और दुःखी राम। तुलसी की मानस में भी ! तुलसी महान राम भक्त थे और उन्होंने मानस में श्रीराम को एक योद्धा

की तरह चरितार्थ किया है। जो हर परिस्थिति में समान अवस्था में हो। बिल्कुल निर्विकार। शोकहीन। लेकिन सीता हरण का प्रसंग लिखते समय तुलसी भी अपने प्रभु के मन का असह्य विषाद और रुदन नहीं छुपा सके। वे लिखते हैं -

'घन घमंड नभ गरजत घोरा।

प्रिया हीन डरपत मन मोरा॥'

तीनो लोकों के स्वामी और एक बाण से सम्पूर्ण सृष्टि का विनाश करने की शक्ति रखने वाले राम भी डरते हैं। अनहोनी से। जैसे साधारण मनुष्य डरता है। रोता है। अपनी प्रिया की याद में। जैसे समान्य मनुष्य रोता है।

मेरे राम एक रूप में विद्यमान नहीं हैं। मेरे राम के समय - समय पर अनेक रूप हैं। परिस्थिति के अनुकूल। निर्विकार। हर साँचे में ढलने वाले। जैसा आज के समय में एक मनुष्य को होना चाहिए।

आपके अपने राम कैसे हैं इसपर जरूर सोचिए। मेरी समझ में राम को देवता या ईश के रूप में बांधने से हम उन्हें पूरी तरह नहीं जान पाएँगे। क्योंकि बंधन में बंधकर हम कमजोर हो जाते हैं।

बाकी तो राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त कह ही चुके हैं -

'राम। तुम्हारा चरित्र स्वयं ही काव्य है।

कोई कवि बन जाए सहज संभाव्य है॥'

अस्तु।

- श्रीराम गोयल

आईआईटी गुवाहाटी

यथार्थ से कितनी दूर

यदि जीवन की परिभाषाओं पर गौर किया जाए तो हम यथार्थ के कितने करीब जा पाएंगे ? वास्तविक जीवन को परिभाषित करने के लिए क्या और कितना आवश्यक है ? इस अनिश्चितता के समय में ऐसा क्या है जो यथार्थ के पैमाने को स्थापित कर पाए ? जहां एक ओर हर कोई स्वार्थ सिद्धि हेतु परहित को भूल जा रहे हैं वही दूसरी ओर व्यक्ति स्वयं से निराश होकर अपना जीवन स्वयं ख़त्म कर लेना आसान समझ रहा है। दो जून की रोटी, रहने के लिए मकान और पहनने के लिए कपड़ा यह तो जीवन की परिभाषा कतई नहीं हो सकती। आम तौर पर हम जीवन की कठिनाइयों और उसकी समस्याओं आज से इतने घिरे होते हैं कि वास्तविकता को देखने में असमर्थ हो जाते हैं। वास्तव में वास्तविकता पर एक ऐसा पर्दा पड़ा होता है जो आडम्बरों को भी एक नई वास्तविकता की पहचान दे देता है और भ्रम वश उसी आडंबर को हम वास्तविकता मानकर उसी अनुरूप कार्य करने लगते हैं। जब भी हम यथार्थ से भागने लगते हैं तब अंधकार की ओर अग्रसर हो जाते हैं।

व्यक्ति के जीवन में किस चीज का कितना महत्व है और वह उसे किस तरह से महत्व देता है, यह देखना बड़ा दिलचस्प होता है। आवश्यकता के अनुसार महत्त्व या महत्व के अनुसार आवश्यकता यह व्यक्ति के विवेक पर निर्भर करता है। संभावनाएं तब तक व्यक्ति के साथ होती हैं जब तक वह जीवित है। हर क्षण नई संभावनाएं जन्म लेती हैं। चूंकि समय अनंत है अतैव संभावनाएं भी अपार हैं। संभावनाओं के इसी सागर में यथार्थ परिभाषित होता है। हारने की संभावना में जीवन का यथार्थ, रुकने की संभावना में चलने का यथार्थ, गिरने की संभावना में उठने का यथार्थ, रोने की संभावना में हंसने का यथार्थ और ऐसे अनगिनत यथार्थ संभावनाओं में ही निहित होते हैं।

जीवन में संघर्षों के होना भी आवश्यक है, संघर्ष ही हमें यथार्थ के कुछ आस आप तक ले जाते हैं। संघर्ष को प्रकृति के सास्वत नियम 'बदलाव' से समझा जा सकता है। बदलाव दो प्रकार के होते हैं। पहला आप स्वयं समय के साथ बदल जाएं और दूसरा समय आपको स्वयं के साथ बदल ले। मानव स्वाभाव समय के बदलाव को आसानी से स्वीकार नहीं कर पाता इसलिए स्वयं से बदल जाना बेहतर है। किन्तु बदलाव के इस चक्र में अपनी वास्तविक पहचान बचाये

रखना ही जीवन संघर्ष है ।

व्यक्ति को जीवन के यथार्थ से परिचित होना नितांत आवश्यक है । मानवीय गुण, परोपकार की भावना, एक दूसरे के प्रति परस्पर प्रेम की भावना आदि जीवन के एक सार्थक अंग है । यदि आज के भौतिक परिवेश और घट रही घटनाओं पर एक नजर डालें तो हम यह साफ़्फ़-साफ़्फ़ देख सकते हैं कि हम अपनी वास्तविकता से कितनी दूर हैं । उदाहरण के लिए कोविड-१९ को ले लेते हैं । इस महामारी के पहले हर व्यक्ति ऐसे ही कुछ आडंबरों का शिकार था । जैसे कि धन होते हुए व्यक्ति अपनी सुख-सुविधाओं की सभी चीजें खरीद सकता है, शक्ति होते हुए सम्पूर्ण विश्व पर शासन कर सकता है, लेकिन इस महामारी ने वास्तविकता की एक अलग ही परिभाषा दे दी । आत्मसंयम, आत्मनियंत्रण और आत्मबल ही सर्वोत्तम है ।

देश में घट रही तमाम हृदय विदारक घटनाओं जैसे पालघर हत्याकांड, औरंगाबाद रेल दुर्घटना, तमाम असहाय मज़दूरों का अपने बच्चों बुज़ुर्गों आदि को कंधे पर बिठाकर हज़ारों हज़ार किलोमीटर के सफ़्फ़र पर निकलना और भूख प्यास के चलते रास्ते में ही सदा के लिए सो जाना, हमें एक अलग ही वास्तविकता से परिचित करा रही हैं ।

सारी घटनाओं, सब परिस्थितियों को देखकर यदि उनका आंकलन किया जाए तो स्पष्ट देख सकते हैं कि यथार्थ अभी हमसे या हम यथार्थ से कितनी दूर हैं ।

- अभिषेक शुक्ल
चंडीगढ़ विश्वविद्यालय

अुर्शास्त्र की दृष्टि से कोरोना का विश्लेषण

खेती न किसान को भिखारी को न भीख भली,
वनिक को वनिज न चाकर को चाकरी।
जीविकविहीन लोग सिद्यमान सोच बस,
कहैं एक एकन सो 'कहाँ जाइ का करी'।

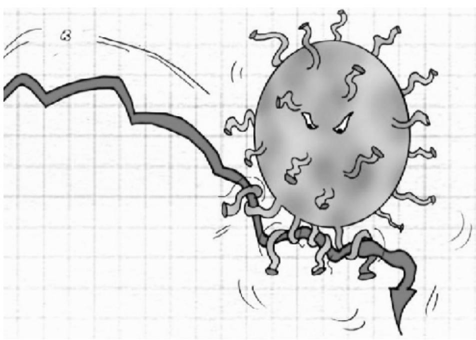

तुलसीदास ने भले ही ये पंक्तियां सोलहवीं शताब्दी के परिस्थितियों को देखते हुए रचा हो किन्तु ये स्थिति आ भी हमारे सामने उतनी ही प्रासंगिक है। हमारे भारत देश का एक बड़ा सामाजिक वर्ग आज भी गाँवों और शहरों में जीवनयापन की मूलभूत आवश्यकताओं से भी वंचित होकर जी रहा है ऐसे समय में तत्कालीन वैश्विक महामारी जैसी समस्या किसी भीषण आपदा से किन्ही मामलों में कम नही। इन परिस्थितियों में सरकार द्वारा लिए गए 'लॉक डाउन' का निर्णय जनमानस में विषाणु के फ्फ़ैलने से रोकने में तो महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है किंतु यह उन श्रमिकों के लिए किसी भी प्रकार से विभीषिका से कम नही जिनके जीवनयापन का मूल आधार दैनिक श्रम है।

इस वैश्विक महामारी में राष्ट्रीय स्तर पर तालाबंदी हमें और हमारी अर्थव्यवस्था को काफ्फ़ी पीछे ले जा रहा है। दैनिक श्रम के श्रमिकों की तो बात ही छोड़ दीजिये, व्यापारी वर्ग भी इससे त्रस्त हो चला है। व्यापार के सभी बड़े उद्योगों के ठप्प पड़ने के कारण सामानों की कमी से जो निर्यात पर प्रभाव पड़ा है वह विचारणीय तो है ही साथ ही साथ आने वाले समय में वस्तुओं की कमी के कारण मंहगाई का सुरसा स्प देखने को मिलने वाला है ह भी चिन्तनीय है। इसका सीधा सीधा प्रभाव निम्न और मध्यवर्ग पर पड़ने वाला है। इससे देश के अर्थव्यवस्था की रीढ़ टूटती दिखाई पड़ रही है जो चिंता का विषय है।

किन्तु जिस प्रकार प्रत्येक घटना के दो आयाम होते हैं और दोनों परस्पर एक दूसरे के विपरीत होते हैं उसी प्रकार इस लॉक डाउन के भी दो पहलू हैं जो एक ओर तो आर्थिक स्तर पर अर्थव्यवस्था को पीछे धकेल कर आने वाले समय में महंगाई को आमंत्रित कर रहा है तो दूसरी ओर व्यापार क्षेत्र में नवीनीकरण का मार्ग खोलकर व्यापारिक वर्ग और

आम श्रमिक वर्ग के लिए नए अवसर भी उत्पन्न करने वाला है। अतः वस्तुस्थिति को देखते हुए हमारे सामने जो अवसर प्रतीत हो रहे हैं वो निम्नलिखित हैं -

१ - स्वच्छता से सम्बंधित व्यवसाय - विषाणु संक्रमण के इस भयावह स्थिति ने आम जनमानस का ध्यान स्वच्छता की ओर तेजी से आकृष्ट किया है। ऐसी स्थिति में स्वच्छता से सम्बंधित उत्पादों का उत्पादन करने वाली कम्पनियों के उत्पादन में वृद्धि की अपार संभावनाएं हैं। ज्ञातव्य है कि उद्योग कम्पनियों को अपने उत्पादन को बढ़ाने के लिए बड़ी संख्या में श्रमिकों की आवश्यकता होगी जिससे रोजगार के नए अवसर उपलब्ध होंगे।

२ - तीव्र नवीनीकरण के लिए प्रतिस्पर्धा - राष्ट्रीय तालाबंदी के कारण बन्द हो चुके उद्योगों को शुरूकरने के पश्चात सभी कम्पनियों में एक दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ लगने वाली है। साथ ही साथ उन उत्पादों की कम्पनियाँ जिनके पुराने संग्रह खत्म होने की कगार पर हैं वे भी अपनी स्थिति को पूर्व की भाँति बनाने के लिए जी तोड़ परिश्रम करेंगे। ऐसी स्थिति में सभी कम्पनियां स्वयं को विशिष्ट (ब्रांड) बनाने का पूरा प्रयास करेंगी जिससे न केवल श्रमिकों की संख्या में बढ़ोत्तरी की संभावनाएं हैं अपितु उनके पारिश्रमिक में भी वृद्धि की अपार संभावनाएं दिखती हैं।

३ - व्यक्तिगत आवागमन के साधनों के उत्पादन व विपणन में वृद्धि - यद्यपि सामाजिक दूरी के पालन का निर्देश विषाणु संक्रमण से सुरक्षा को ध्यान में रखकर दिया गया है तथापि उसके बाद भी मध्यम वर्ग सार्वजनिक आवागमन के साधनों में होने वाली भीड़भाड़ को लेकर आशंकित रहेगा एवं वह व्यक्तिगत साधनों पर ही ज्यादा विश्वास करेगा। ऐसी स्थिति में दोपहिये और चारपहिये साधनों के उद्योगों में रोजगार की संभावना बढ़ेगी।

४ - डिजिटल क्रांति में रोजगार के अवसर - हमारे औद्योगिक और शैक्षिक क्षेत्रों में आंकिकीकरण (डिजिटलाइजेशन) की प्रतिष्ठा तो पहले से ही रही है लेकिन लॉक डाउन में इसने एक क्रांति के रूप में कार्य किया है। इंटरनेट के माध्यमों से होने वाली शैक्षणिक गतिविधियाँ निःसंदेह इसको भविष्य में भी बढ़ावा देने वाली हैं जिसके कारण इसके बाह्य एवं आंतरिक ज्ञान रखने वालों के लिए रोजगार के अपार अवसर दिखाई देते हैं।

५ - सामानों की घर तक पहुँचाने सम्बन्धी व्यवसाय - राष्ट्रीय तालाबंदी के दौरान सामान्य दिनचर्या के जैसे फफ़ल सब्जी और किराने के सामानों की घर तक पहुँच में बहुत वृद्धि हुई है एवं यह एक सफफ़ल व्यवसाय के रूप में उभरा है। ऐसे में इंटरनेट से जुड़ी हुई कई सारी बेबसाइट्स भी इस संदर्भ में काफफ़ी सक्रिय पाई गई हैं। इनके अलावा अतिसामान्य श्रमिक जो फफ़ुटकल खाद्यान सामग्री के आपूर्ति द्वारा अपनी जीविका चला रहे उनके लिए भी यह एक नया रोजगार सिद्ध हो सकता है।

६ - लघु एवं कुटीर उद्योगों में रोजगार के अवसर - तत्कालीन परिस्थितियों ने बड़े बड़े महानगरों के बढ़ती लोगों का आबादी एवं विशाल जनसमूह की ओर से लगभग मोहभंग सा हो रहा है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति अपने घर से कम से कम दूरी पर रहना पसंद करेगा जिससे विपत्तिकाल में वह अपने परिजनों के साथ रह सके। तब वह जीविकोपार्जन के लिए कुटीर एवं लघु उद्योग आरम्भ करेगा जिसमें आम श्रमिक वर्ग को भी जीविका उपलब्ध होगी।

७ - नए बाजारों को अवसर - महानगरों से मोहभंग की स्थिति में लघु और कुटीर उद्योगों के बनाए गए नए सामानों के विक्रय के लिए छोटे छोटे स्थानों पर पनपे नए नए बाजारों को विस्तार मिलेगा। इसलिए यह भी रोजगार का एक अवसर हो सकता है।

उपसंहार - उपरोक्त सभी बिंदुओं पर अध्ययन के पश्चात हम देखते हैं कि यदि एक ओर हम लॉक डाउन के कारण आर्थिक स्तर पर जूझ रहे हैं तो वहीं दूसरी ओर भविष्य को लेकर आशाएँ भी हैं। आने वाला समय हमें शैक्षिक, व्यवसायिक क्षेत्रों में रोजगार के कई सारे नवीन अवसर उपलब्ध कराने वाला है जिससे जीविकोपार्जन हो सकता है। ऐसे में मेरी स्मृति में अपनी ही दो पंक्तियाँ आ रही हैं -

'मनु धीर धरो अवसर देखो तुमको प्रकृति ने पाला है..!
जब रात भयावह हो, समझो अब सूरज उगने वाला है..!!'
आशुतोष तिवारी 'आशू

- **आशुतोष तिवारी 'आशू'**
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

मै मानव हूं?

मै इस धरती पर रह रहा एक सामाजिक प्राणी हूं, जिसे अपना जीवन अपने तरीके से जीने का वरदान मिला है। मै एक ऐसा जीव हूं जो इस दुनिया की हर एक चीज हाथ में रखने में समर्थ हूं। मेरे जैसा कोई नहीं है। पर मेरे जैसा कोई क्यों नहीं है यह अब तक समझ नहीं पाया हूं।
शायद मैने अपनी जिंदगी के लिए बहुत कुछ सोचा है और उसे साकार करने की लगातार कोशिश की है। हर एक सपने को में अपने तरीके से जीने में विश्वास रखता हूं। चाहे वो कर्म मेरे अपनों के लिए या इस धरती के लिए दुखदाई क्यों ना हो, पर मै तो कर्मठ हूं जीतूंगा ही।

या फिर मैने अपनी जिन्दिगी में कुछ ऐसा किया हो कि जिससे मेरे माता पिता अत्यंत भावुक हो गए है। उनको हमेशा खुश देखना चाहता हूं। पर यदि वो मेरे ख्वाबों के रास्ते में आए तो मै उनसे भी बहस करने में पीछे नहीं हटूंगा।

मेरे बहुत अच्छे मित्र भी है। मै उन सबके साथ रहना बहुत पसंद करता हूं। वो मेरे अनुसार ही हर काम करना पसंद करते है। आखिर है तो मेरे ही साथी। जो मै करता हूं शायद वो भी उस है करना पसंद करते है या नहीं पर किसी ने मुझसे ऐसी मित्रता की भी की उसपर ऐसा भरोसा करू इसको भी अपने अनुसार ही चलाऊंगा।

जब से इस धरती पर आया हूं देखता हूं की कही पर पेड़ पौधे है तो कहीं बंजर ज़मीन। समझ नहीं आता कि भगवान ने प्रकृति के साथ इतना भेदभाव क्यों किया ,मै तो नहीं करता, शायद मै सही हूं। भगवान जब प्रकृति नहीं संभाल पाए तो मेरा अच्छा भी कैसे देखेंगे।

इसलिए शायद मेरे साथ सब बूरा हो रहा है।
मैने अपने घर को सुख सुविधायों से परिपूर्ण करने में कोई कसर नहीं छोडी,फनीचर , आधुनिक तकनीक से लुभानवित मै हर एक खुशी को सिफर्फ़ अपने सुख को प्रकट करता हूं।

मै बडी से बडी कंपनी चलाता हूं। इसमें कई तरीकों से उत्पाद बनता हूं जो इंसान को सुखी रखे। खैर यह तो बाहर की बात है, मै बस इतना चाहता हूं कि अपनी जेब गरम रखूं दूसरो का क्या है

उनके साथ कुछ भी हो मुझे कोई फर्क नही पडता।

मै मानव हूं जो हर एक पल कभी प्रकृति, कभी माता - पिता, कभी गुरु, कभी दोस्त, कभी कोई और करीबी को किसी ना किसी तरह अपने सपनों के तहत दुखी कर देता हूं ।गलतियां इंसानों से ही तो होती है। मुझे अपने बारे में सोचना अच्छा लगता है। मै मै हू। मेरे जैसा कोई नहीं।

यदि मेरे जैसा कोई नहीं तो शायद मै मान लूं कि हां यह तो ' इंसानियत ' है । पर अब तो यह खूबी दुनिया मै रही ही नहीं। यदि हो तो उससे कहना इस मानव को दानव बनने से रोक ले।

- नेहा झा
चंडीगढ़ विश्वविद्यालय

आँसू- जयशंकर प्रसाद

इस करुणा कलित हृदय में
अब विकल रागिनी बजती
क्यों हाहाकार स्वरों में
वेदना असीम गरजती?

प्रसाद जी की इन पंक्तियों के साथ शुरूहोती है छायावाद की अनुपमता को समेटे 'आँसू' नाम की रचना जिसमें प्रसाद जी भावनाओं के उच्च ज्वाल को समेटे रहते हैं। प्रसाद जी इस काव्य कृति के माध्यम से आँसू को उन भावनाओं में वर्णित करते हैं जो आपके हृदय को विह्वल कर दे और अनायास ही आंखों में नमी ला दे।

आती हैं शून्य क्षितिज से
क्यों लौट प्रतिध्वनि मेरी
टकराती बिलखाती-सी
पगली-सी देती फ़ेरी?

प्रश्न नियति से है, प्रश्न हृदय की विह्वलता से है, प्रश्न हर एक भावनात्मक पहलू से, प्रश्न जीवन से है। अतीत न तो निराधार होता है न अज्ञानता का सूचक वह तो स्वयं ही आने वाली पीढ़ियों को नवीन ज्ञान के पुष्प से पल्लवित करता है।

अगली कुछ पंक्तियाँ हृदय को बिंधती हुई प्रतीक होती हैं
छिल-छिल कर छाले फ़ोडे.
मल-मल कर मृदुल चरण से
धुल-धुल कर वह रह जाते
आँसू करुणा के जल से।

ये स्वयं ही जीवन की प्रेरणा हैं, कुठाराघात हैं उन भावनाओं पर और उन छोटी सोची जो आँसू

को कमजोर होने का प्रतीक मान लें। वो एक पीड़ा थी, एक तकलीफ़ थी आज आँसू बन गयी तो कल परिवर्तन होगा-

जो घनीभूत पीडा थी
मस्तक में स्मृति-सी छाई
दुर्दिन में आँसू बनकर
वह आज बरसने आई।

हर एक पंक्ति हृदय को छूने के लिए काफ़ी है। छायावाद की ही विशेषता कह सकते हैं जिसने प्रकृति का मानवीकरण सबसे बेहतर तरीके से किया है। यह रचना पढ़ना एक सौभाग्य है, छायावाद की एक भेंट है। प्रकृति का सबसे बेहतर मानवीकरण पढ़ना हो तो प्रसाद जी उनमे से एक हैं बिल्कुल स्वच्छंद रूप से सजीव भावों के रचनाकार।

- मृदुल कुमार ओझा
प्रधान संपादक

सूरज का सातवां घोड़ा - धर्मवीर भारती

धर्मवीर भारती जिनके नाम के साथ याद आता है कालजयी उपन्यास 'गुनाहों का देवता' जिसमें प्रेम तो ऐसा जिसकी परिकल्पना ही अत्यधिक कठिन, चित्रण ऐसा जो हर क्षण को जीवंत कर दे। परंतु भारती जी का दूसरा उपन्यास 'सूरज का सातवां घोड़ा' अपने में पूर्णतया अलग और विलक्षण कृति है। जैसा कि वह स्वयं घोषित करते हैं कि वो मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित हैं परंतु वो आज कल के तथाकथित साम्यवादियों की तरह नहीं हैं जो कि पूर्वाग्रह, कुंठा को हृदय में दबाए रचनाएं लिख रहा हो।

इस उपन्यास के प्रमुख किरदार हैं माणिक मुल्ला उन्हीं के माध्यम से भारती जी उपन्यास को आगे बढ़ाते हैं। प्रेम और राजनीति का ज्ञान मुल्ला के पास अकाट्य होता है परंतु मुल्ला हमेशा साहित्य शोध के विषय पर प्रेम को तरजीह देते हैं। कहानी माणिक मुल्ला सुनते हैं, अपने प्रेम की जिसमें उनको एक बार नहीं तीन बार प्रेम होता है और जब होता है तो वे सारी सीमाएँ पर कर उसको निभाते हैं।

कहानी सात दोपहरों में सुनाई जिसमे सातवी दोपहर के अध्याय का नाम ही है सूरज का सातवां घोड़ा'। यह नाम अंत में भारती जी स्वयं स्वीकार कार्टर हुए लिखते हैं शायद यह पाठक गण पसंद न करें परंतु ये नाम माणिक मुल्ला का दिया हुआ ही है।

उपन्यास बहुत ही छोटा है ये कुछ कहानियों का समन्वय है परंतु भारती जी जैसा रचनाकार इतने में ही बहुत कुछ कहने में समर्थ है। इसे लघु उपन्यास की संज्ञा दी गयी है। कथानक की बनावट उपन्यास की विषय-वस्तु को नए आयाम प्रदान करती है। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' भी भारत-ईरान की प्राचीन शैलियों से प्रभावित माना जाता है। लेकिन, पुरानी किस्सागोई का यह तरीका ड्डअलिफलैला, पंचतंत्र, दशकुमारचरित अथवा कथासरितसागर - 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की ऊपरी त्वचा मात्र है, इसे कथानक का बुनियादी ढाँचा नहीं माना जा सकता। एक दूसरी शैली भी इसमें परिलक्षित की जा सकती है- वह है, वीरगाथाओं या अन्य महाकाव्यों जैसी शैली, जिसमें रचनाकार अपनी रचनाओं का रचयिता ही नहीं वरन् घटनाओं के बीच स्वयं भी उपस्थित है। वह भोक्ता और रचयिता दोनों है। इस प्रकार रचना तटस्थ होने, निजी

अनुभूति को सार्वजनिक अनुभव में तब्दील करने का दायित्व बन जाती है। 'पृथ्वीराज रासो' के रचयिता चंदवरदायी इसके महत्वपूर्ण चरित्र भी हैं, ठीक उसी तरह जैसे वाल्मीकि और तुलसी खुद को अपनी रचनाओं में उपस्थित कर देते हैं या कि संजय महाभारत के घटनाचक्र में मौजूद है।

इस उपन्यास के मुख्य सरोकार माणिक की कहानियों के इर्द-गिर्द ही विकसित होते हैं। वे देखने में सीमित लग सकते हैं लेकिन इससे कौन इंकार करेगा कि हमारी जिंदगी की अधिकतर ऊर्जा इन्हीं छोटी-मोटी समस्याओं को सुलझाने में निकल जाती है और मध्यवर्गीय जनसमूह इन्हीं उपलब्धियों के द्वारा स्वयं को सार्थक महसूस कर पाता है।

सार्थकता है पढ़ने में, समझने में और हिंदी साहित्य के इस अनोखे विषय को महसूस करने में। आप इसमें हर छोटी कहानी किरदार से जुड़ाव महसूस करेंगे और आप अनुभव करेंगे कि मानव जीवन किस प्रकार स्वयं के सामने अनेकानेक किरदार कहानी छोड़ता पीछे चला जाता है और अनेको विषयों से यूँ ही अनजान रह जाता जब तक एक ऐसी दुपहरी न आये जिसमें संध्याकाल उसे निश्चिंतता दे सके।

- मृदुल कुमार ओझा
प्रधान संपादक

साहित्य समागम

समाचार लाइन कॉम
सही ख़बर.... सही असर

अज्ञेय काव्य लेखन प्रतियोगिता

आप अपनी कविता या गजल भेज सकते हैं

अंतिम तिथि - 31 जुलाई 2020

Scan & Pay

एंट्री फीस 100 रुपये प्रति एंट्री
2 एंट्री 150 रुपये
GOOGLE PAY 8120889800

पेमेंट की स्क्रीनशॉट हमें व्हाट्सएप करें (8962679271 इस नंबर पर)

पुरस्कार 5000 रूपये तक
श्रेष्ठ कवि का पुरस्कार (प्रथम तीन स्थान तक प्राइज मनी)
श्रेष्ठ 5 भेजी गयी कविताओं का पत्रिका में प्रकाशन
श्रेष्ठ 15 का वेबसाइट में प्रकाशन

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें - मृदुल कुमार ओझा 6390807345
कविता/ग़ज़ल सेंड करें - विश्व प्रताप सिंह 8962679271 (WhatsApp)
sahityasamagam4@gmail.com